ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 01 फरवरी 2026 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 01 फरवरी 2026 से 07 फरवरी 2026

माघ शु. 15 ● वि० सं०-2082 ● वर्ष 67, अंक 05, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 201 ● सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,126 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रु. ● वार्षिक शु. 300/- रु.

डी.ए.वी. सैक्टर-39 डी, चंडीगढ़ में नववर्ष पर हुआ यज्ञ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर–39 डी चंण्डीगढ़ में नववर्ष के शुभ अवसर पर विद्यालय प्रांगण में वैदिक परंपराओं के अनुरूप हवन का कार्यक्रम किया गया। इस आध्यात्मिक कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का आगामी परीक्षाओं में सफलता, मानसिक शांति तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना था।

हवन कार्यक्रम में प्रधानाचार्या श्रीमती मनिंदर वोहरा जी तथा शिक्षकगण, कर्मचारी तथा विद्यार्थियों ने श्रद्धा एवं अनुशासन के साथ सहभागिता की। मंत्रोच्चारण और आहुतियों के माध्यम से विद्यालय परिसर में सकारात्मक एवं पवित्र वातावरण का निर्माण हुआ। विद्यार्थियों ने पूरे मनोयोग से हवन में भाग लेकर आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया।

इस अवसर पर महान समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी एवं शिक्षाविद् स्वामी श्रद्धानंद जी के आदर्शों और उनके सर्वोच्च बलिदान को भी स्मरण किया गया। उनके द्वारा शिक्षा, नारी उत्थान और वैदिक धर्म के प्रचार हेतु किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला गया तथा विद्यार्थियों को उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी गई।

विद्यार्थियों को नववर्ष की शुभकामनाएँ दीं तथा उन्हें परिश्रम, आत्मविश्वास, अनुशासन और नैतिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम का समापन शांति पाठ के साथ हुआ। यह आयोजन विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच, आत्मबल और एकाग्रता को बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ।

डी.ए.वी. ककराला में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल ककराला के प्रांगण में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस पर विद्यार्थियों ने यज्ञ में आहुतियाँ डालकर स्वामी जी प्रयास करने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में उपस्थित अध्यापक कुलवंत कौर, सुरजीत सिंह और सुखमन सिंह आदि थे। विद्यालय प्राचार्य श्री वरुण शर्मा ने सभी को स्वामी श्रद्धानंद

को याद किया।

विद्यालय के धर्म शिक्षक आचार्य अनिल कुमार शास्त्री ने स्वामी जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी जी ने अपना पूरा जीवन देश और धर्म की सेवा में अर्पित किया। शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी सकारात्मक परिवर्तन किए। शास्त्री जी ने सभी बच्चों को समाज में अच्छे कार्यो के साथ अविद्या से विद्या की ओर बल देने का सर्वदा बलिदान दिवस पर शत–शत नमन करते हुए स्वामी जी के विचारों पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने अपना जीवन समाज सुधारने में लगाया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार आदि शिक्षण संस्थानों की स्थापना की।

प्राचार्य महोदय ने छात्रों को यह संकल्प लेने हेतु प्रेरित किया कि वे राष्ट्र और समाज कल्याण के कार्यों में सोत्साह भाग लेते रहेंगे।

डी.ए.वी. जयपुर में 77वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह

वैशाली नगर स्थित डी.ए.वी. सेंटेनरी पब्लिक स्कूल जयपुर में हर्षोल्लासपूर्वक 77वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह मनाया गया। गणतन्त्र दिवस समारोह का शुभारम्भ राष्ट्रध्वज आरोहण व राष्ट्रगान के साथ हुआ। इसके उपरान्त देशभक्ति गीत पर नृत्य के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई।

विद्यालय के शिक्षकों ने प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चमाध्यमिक विभिन्न स्तरों पर सुरीले व देशभक्ति से ओतप्रोत गीत प्रस्तुत किये। विद्यालय के प्राचार्य श्री अशोक कुमार शर्मा ने प्रेरक कविताओं की प्रस्तुति के साथ गणतन्त्र दिवस के उचित भाव को ग्रहण करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा–"गणतन्त्र भीड़ का तन्त्र नहीं, अपितु सुशासन है। स्वतंत्रता दिवस हमें स्वतन्त्रता देता है, किन्तु गणतन्त्र दिवस हमें अपनी स्वतन्त्रता के साथ कुछ मर्यादाओं में बाँधता है।" उन्होंने बताया कि शिक्षा जगत् में एन.सी.ई.आर.टी की पाठ्यपुस्तक में प्रारम्भिक पृष्ठ पर दी गई संविधान की उद्देशिका पर यदि ध्यान दिया जाए, तो यह हमें तन्त्र अर्थात् शासन के प्रति संवेदनशील बनने का संदेश देती है।

हम अपने संविधान के प्रति, उद्देशिका के प्रति व अनुशासन पालन के प्रति संवेदनशील बनें। इस आह्वान के साथ उन्होंने पुनः सभी को 77वें गणतन्त्र दिवस की शुभकामनाएँ दीं। वन्देमातरम गीत व प्रसाद वितरण के साथ समारोह का समापन हुआ।

जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषि मुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम **'यज्ञ'** है। क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 01 फरवरी 2026 से 07 फरवरी 2026

मनोबल, सत्य, यश, श्री

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीय।
पशूनां रूपमन्नस्य रसो, यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।
यजु ३९.४

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**मनसः**) मन की (**कामं**) इच्छा–शक्ति को [तथा] (**आकूतिं**) संकल्प–शक्ति को [और] (**वाचः**) वाणी के (**सत्यं**) सत्य को (**अशीय**) प्राप्त करूं। (**पशूनां**) पशुओं का (**रूपं**) रूप, (**अन्नस्य**) अन्न का (**रसः**) रस, (**यशः**) कीर्ति [और] (**श्रीः**) श्री (**मयि**) मुझमें (**श्रयतां**) स्थित हो। (**स्वाहा**) एतदर्थ आहुति देता हूं, सत्क्रिया करता हूं।

मैं चाहता हूं कि मैं एक उत्कृष्ट मानव बनूं, मेरे अन्दर विविध शक्तियाँ अपने पूर्णरूप में निवास करें। मेरे मन के अन्दर प्रबल इच्छा शक्ति (काम) और संकल्प शक्ति (आकूति) हो। मानव इच्छाएं करता रहता है, परन्तु वे पूर्ण नहीं होतीं, यह इच्छा शक्ति की दुर्बलता का चिन्ह है। योगी जन बताते हैं कि इच्छा शक्ति को बलवान् बना लेने पर मनुष्य जो इच्छा करता है वह पूर्ण होकर रहती है। वह इच्छा करता है कि अमुक पापी धर्मात्मा बन जाए, या अमुक रोगी का रोग दूर हो जाए, तो सचमुच वैसा ही हो जाता है। मन की दूसरी शक्ति संकल्प शक्ति है। संकल्प की दृढ़ता होने पर मनुष्य अपने व्रत से च्युत नहीं होता। जो व्रत एक बार धारण कर लेता है, अन्त तक उसका निर्वाह करता है। यदि वह संकल्प करता है कि मैं आज से ब्रह्मचारी रहूंगा, तो उस पर दृढ़ रहता है। यदि वह संकल्प करता है कि मैं आज से धूम्रपान करना छोड़ता हूं, तो सचमुच उसका यह व्यसन छूट जाता है। इसके विपरीत जिनमें संकल्प शक्ति की दृढ़ता नहीं होती, वे नित्य नवीन–नवीन संकल्प करते हैं, और किसी न किसी बहाने उन्हें तोड़ते रहते हैं।

मेरी यह भी कामना है कि मेरी वाणी में सत्य हो। वाणी में सत्य तभी आ सकता है, यदि मन में भी सत्य हो। यदि मन में सत्य होगा, तो वह कर्म में भी आयेगा। इस प्रकार मनसा, वाचा, कर्मणा मैं सत्यमय हो जाऊं, यह मेरी आन्तरिक अभिलाषा है। पतंजलि मुनि ने कहा है कि जिसके अन्दर सत्य प्रतिष्ठित हो जाता है, उसे क्रिया–फलाश्रयत्व प्राप्त हो जाता है, उसकी वाणी अमोघ हो जाती है। उसकी वाणी से दिये गये आशीर्वाद सत्य सिद्ध होते हैं। मेरी वाणी में भी यह दिव्य शक्ति आये।

मेरी यह भी अभिलाषा है कि मुझे गाय आदि दुधारू पशुओं का दूध यथेच्छ मात्रा में मिले, जिससे उसके सेवन से प्राप्त होनेवाला सौन्दर्य मुझमें आये। मुझे सात्विक अन्नों से मिलनेवाला रस–रक्त भी प्राप्त हो। मुझे धर्म और सत्कर्म से प्राप्त होनेवाली कीर्ति भी मिले और मेरी श्री, मेरी शोभा, दिग्दिगन्त में फैले। उक्त सब कामनाओं और आदर्शों की पूर्ति के लिए 'स्वाहा' हो, सत्क्रियाओं और सत्यप्रयासों की निरन्तर आहुति पड़ती रहे।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु–भक्ति

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

संसार में कुछ महापुरुष ऐसे जन्म लेते है जो विश्व में अपना, परिवार का, गुरुजनो का नाम भी अपने कृत्यों से प्रसिद्ध कर जाते हैं। साधारण से साधारण घटनाएँ भी उनके जीवन को मोड़कर उत्कर्ष पर पहुँचा देती हैं। महात्मा आनन्द स्वामी का जीवन भी ऐसी ही विषम परिस्थितियों से निकलकर उच्च आदर्श परिवार के संसर्ग से, ऋषि दयानन्द की विचारधारा से, महात्मा हंसराज जी के सानिध्य से चमक उठा। इसका सम्पूर्ण श्रेय ईशभक्ति से उन्हें मिला। गायत्री मन्त्र वह महान मन्त्र था जिसे स्वामी नित्यानन्द जी की प्रेरणा से बालक खुशहाल चन्द जी ने अर्थ सहित जाप करके अद्भुत, प्रज्ञा पाई और इसी की बदोलत खुशहाल चन्द जी की प्रेरणा से लाखों नर–नारी अपने जीवन को सफल करने में समर्थ हुए। स्वतन्त्रता संग्राम में जेल में रहकर लेखनी के प्रहार से तत्कालीन सरकार को भी प्रभावित किया। मानवता का संदेश देने हेतु कष्टों की परवाह नहीं की, केवल ईश भक्ति के मार्ग का ही प्रचार–प्रसार किया....।

.... अब आगे

असार संसार

असार है यह संसार और फिर यह शरीर तो सर्वथा क्षणभंगुर है। जो श्वास आता है, उसके जाते समय कोई नहीं कह सकता कि फिर यह लौटकर आयेगा या यही अन्तिम श्वास सिद्ध होगा। **यजुर्वेद का स्वाध्याय करते हुए जब मैं पैंतीसवें अध्याय पर पहुँचा और इसके बाइसों मन्त्रों का पाठ किया तो मेरी आँखें खुल–सी गई।** भगवान् ने हमें इस संसार में क्यों भेजा ? जीव को यहाँ आकर क्या करना चाहिए ? जन्म और मृत्यु क्या है ? मरकर क्या गति होती है ? कुछ ऐसी समस्याएँ मेरे सामने उपस्थित हो गईं, जिन पर कभी विचार करने की आवश्यकता ही न पड़ी थी परन्तु इस अध्ययन ने मुझे बाधित कर दिया कि मैं इन पर विचार करूँ। इसी अध्याय का चौथा मन्त्र है–

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाजइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

"कल–पर्यन्त संसार रहे न रहे, ऐसे अनित्य संसार में तुम लोगों की स्थिति है और पत्ते के तुल्य चंचल शरीर में भगवान् ने तुम्हारा निवास किया है। परन्तु, तुम इन्द्रियों ही के दास हो ! परमात्मा की भक्ति करो, इसी से तुम्हारा कल्याण होगा !" स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र का भावार्थ करते हुए लिखा है–"मनुष्यों को चाहिए कि अनित्य–शरीरों और पदार्थों को प्राप्त होके क्षणभंगुर जीवन में धर्माचरण के साथ नित्य परमात्मा की उपासना कर आत्मा और परमात्मा के संयोग से उत्पन्न हुए नित्य सुख को प्राप्त हों !"

क्या काँगड़ेवालों को ज्ञात था कि उनके लिए पाँच अप्रैल की प्रातः आयेगी या नहीं ? बिहार के लोग दिन के समय अपने कामों में संलग्न थे। कोई दुकान पर बैठा था, कोई बाज़ार में जा रहा था, माँ अपने बच्चे को दूध पिला रही थी, भोले बालक आराम से खेल–कूद रहे थे। सब अपने कार्यों में मग्न थे; परन्तु तभी एक ऐसा झटका आया, जिससे सहस्रों मृत्यु की गोद में सो गये। विशाल अट्टालिकाएँ भूमि पर लोटने लगीं, हँसते बालक रो उठे और बाज़ारों की सफ़ाई की गई तो साइकिलों पर सवार लाशें मिलीं। उन्हें इतना भी समय न मिला कि वे साइकिलों से उतर ही सकें। सब जहाँ–के–तहाँ ही मृत्यु के ग्रास बन गये। जिन दिनों खुदाई का काम हो रहा था, उन दिनों मैं वहीं था। मेरे सामने जब एक मकान की खुदाई की गई तो दो लाशें एक–साथ निकलीं। माँ बच्चे को गोदी में लिये स्नान करा रही थी, साबुन की टिकिया उसके हाथ में थी, किन्तु जब मौत आई तो इतना भी नहीं हुआ कि साबुन ही नीचे रख सकती। ठीक तो कहा है–

क्या भरोसा है ज़िन्दगानी का,
आदमी बुलबुला है पानी का।

क्या क्वेटावाले जानते थे कि उनके भाग्य में क्या लिखा है ? उन्तीस जुलाई

की रात को कितनी उमंग, कितने उल्लास, कितनी स्कीमें और कितने ही प्रोग्राम मन में बनाकर वे सोये थे। कितनों ने पहली रात विवाह के कंगन पहने थे, कितनी ही देवियों ने विवाह की मेंहदी लगाई थी परन्तु रात्रि के घने अन्धकार में भूकम्प के एक ही झटके ने सब आशाओं पर पानी फेर दिया। सुन्दर नगर मिट्टी का ढेर बन गया। सैकड़ों मर गये और सहस्रों रोने के लिए जीवित रह गये। किस बात पर मनुष्य इतना इतराता है और क्या सोचकर इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ कामों में नष्ट करता है ? अरे मन ! कभी तूने इस पर विचार किया कि–

खबर नहीं घड़ी एक की,
नहीं इक पल की आस।
ना जाने इस जीव का,
भोर कहाँ हो वास।।

वृक्ष के पत्ते की भाँति यह शरीर कब टूटकर गिर पड़ेगा, यह कोई नहीं कह सकता। फिर जब तक वह वृक्ष के साथ जुड़ा हुआ है, तब तक इसका सदुपयोग क्यों न कर लिया जाए ? क्यों रे मन ! कहो क्या इच्छा है ? इस अल्प काल में, जिसमें से कितना ही समय बचपन में व्यतीत हो गया, कितना ही सोने में गुज़र गया, कितना ही रोगों और उनकी निवृत्ति में लग गया, कितना ही शरीर–रक्षा में चला गया और कितना ही विषय–वासनाओं की पूर्ति में नष्ट हो गया, क्या करने का निश्चय है ? कौन जानता है श्वास अभी समाप्त हो जाने हैं या कुछ समय पश्चात् ? तू इस शेष काल को भी खो देना चाहता है या इसका अच्छा उपयोग करना चाहता है ? जीवन का उद्देश्य तो तुझे भगवान् बता चुके हैं और वह है "भक्ति", अनित्य शरीर में रहते हुए दो नित्य ज्योतियों का मिलाप–आत्मा और परमात्मा का योग। कितने सुन्दर शब्दों में हमारे पूर्वजों ने युवकों तथा युवतियों को सावधान किया है !

यावत्स्वस्थमिदं शरीरमरुजं
यावज्जरा दूरतो।
यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता
यावत्क्षयो नायुषः।।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा
कार्य्यः प्रयत्नो महान्।
संदीप्ते भवने तु कूपखननं
प्रत्युद्यमः कीदृशः ?

"जब तक शरीर स्वस्थ है, जब तक वृद्धावस्था दूर है, जब तक इन्द्रियों की शक्ति कम नहीं हुई है, आयुष्य भी क्षीण नहीं हुआ है, तब तक बुद्धिमान् पुरुष को उचित है कि अपने कल्याण का प्रयत्न भली– भाँति करे। घर में आग लगने पर कुआँ खोदना कैसा !"

पत्थरों से भरी नदी

यजुर्वेद के पैंतीसवें अध्याय के दसवें मन्त्र में कहा गया है–

अश्मन्वती रीयते सँरभध्वमुत्तिष्ठत
प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीमोऽशिवा ये
असंछिवान्वयमुत्तरेमामि वाजान्।।

"पत्थरों से भरी हुई संसार रूपी यह नदी बही चली जा रही है। हे मित्रो ! (इससे पार उतरने के लिए) कमर कसो, उठो और पार उतरकर ही दम लो। दुःखदायी जो बन्धन हैं, उनको यहीं छोड़कर कल्याणप्रद सच्चे बल, आत्म–बल के भरोसे इसके पार उतर चलो। कितने फिसलने पत्थर हैं इस सागर में ! ज़रा ध्यान चूका और फिसल गये।"

भर्तृहरि इस नदी का वर्णन करते हुए कहते हैं–

आशा नाम नदी मनोरथजला
तृष्णा तरंगाकुला।
रागग्राहवती वितर्क–विहगा
धैर्य्यद्रुमध्वंसिनी।।
मोहावर्त सुदुस्तरातिगहनो
प्रोत्तुङ्गचिन्ता तटी।
तस्याः पारगता विशुद्धमनसो
नन्दन्ति योगीश्वराः।।

"आशा नाम की इस नदी में मनोरथ–रूपी जल भरा है। इसमें तृष्णा –रूपी लहर और राग–रूपी मगर हैं। नाना प्रकार के तर्क–वितर्क पक्षी हैं। यह नदी धैर्य–रूपी पेड़ उखाड़ देती है। मोह ही इसके कठिन भँवर हैं, और चिन्ता–रूपी इसके ऊँचे किनारे हैं। इस नदी को शुद्ध मननशील योगी ही पार कर आनन्द को प्राप्त होते हैं।"

अरे मन ! इसी किनारे बैठा तू खेल खेल रहा है। सारे साथी पार जा रहे हैं, ऊपर से काली रात आ पहुँची है और तू पाप की गठरी अधिक भारी करता चला जा रहा है। भारी गठरी उठाकर कैसे पार उतर सकेगा ? जिन विषयों को तू सुख और आनन्द देनेवाला समझे बैठा है, क्या यह तेरे काम आयेगा ? नादान, ये तो यहीं के बखेड़े हैं। तू कुछ भी साथ नहीं ले जा सकता। न धन, न सम्पत्ति, न कोई मोटर, न कुछ और। हाँ, जिन खेलों में तू पड़ गया है, वे तेरी पाप की गठरी को भारी अवश्य बना देंगे और जब तू इस नदी को पार करने लगेगा तो वे बाधा बनकर तुझे दुःख देंगे।

अरे मन ! प्रतिक्षण गठरी में बोझ बढ़ाता ही चला जा रहा है। उठ, छोड़ इन खेलों को ! एक–एक क्षण जो बीत रहा है, अनमोल है, फिर नहीं मिलेगा–

दूर प्यारे की पुरी है,
दिन किनारे आ चुका।
चल, नहीं तो इस झमेले
में पड़ा पछताएगा।

अतएव जो भी और जितना भी समय पास रह गया है, इसे अब धर्माचरण और प्रभु–भक्ति में लगाना चाहिए। एक क्षण के लिए भी मन को अब छुट्टी न दे जिससे वह हमें हमारे जीवनोद्देश्य से विमुख न होने दे।

ऋग्वेद के पहले मण्डल में 164वें सूक्त के जो 37 और 38वें मन्त्र हैं उनमें भी बड़ी सुगमता से अपने–आपको पहचानने और अनित्य शरीर से लाभ उठाने की बात कही गई है–

न वि जानामि यदिवेदमस्मि
निण्यः सन्नद्धो मनसा चरामि।
यदा मागन् प्रथमजा ऋतस्यादिद्वाचो
अश्नुवे भागमस्याः।।

(ऋ. 1–164–37)

"मैं नहीं जानता, मैं कौन वस्तु हूँ। मैं जो एक रहस्य बना हुआ हूँ, अब मन के साथ पूरा तैयार होकर चल रहा हूँ। जब ऋत (सृष्टि–विज्ञान) का बड़ा भाई आत्मविज्ञान मुझे प्राप्त होगा, तभी मैं इस वाक् (वेद) का भेद पाऊँगा।"

अपाङ् प्राङेति स्वधया
गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः।
ता शश्वन्ता विषूचीना वियन्ता न्य
न्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम्।।

(ऋ. 1–164–38)

"अमर आत्मा इस मरनेवाले शरीर के साथ रहता हुआ, माया के वशीभूत हुआ नीचे और ऊपर जाता है (उच्च–नीच योनियों में घूमता है)। अमर और मरनेवाला, दोनों साथ रहते हुए भी सदा भिन्न गति वाले रहते हैं। इनमें से लोग एक को देखते हैं, दूसरे को नहीं।" इस अमर जीवात्मा और मरनेवाले शरीर का सम्बन्ध इसलिए किया गया है ताकि यह 'अमर' दूसरे महाअमर को जो आनन्दस्वरूप है, पा सके। यह शरीर प्रभु को पाने का एक साधन ही है। यदि इस साधन को साध्य समझ लिया जाए और इसी की पूजा आरम्भ कर दी जाए तो क्या गति होगी और उस आत्मा का क्या बनेगा, जिसने हम पर भरोसा किया ! इसका यह प्रयोजन नहीं कि शरीर की सर्वथा अवहेलना कर दी जाए। ऐसा नहीं ! यह तो दुर्लभ है, इसी का तो ज्ञान सबसे पहले प्राप्त करना है, यही तो प्रभु मन्दिर है, इसी की तो पूर्णरूपेण रक्षा करनी चाहिए, इसे भली प्रकार सजाना और खिलाना चाहिये, यह जितना स्वस्थ तथा पुष्ट होगा, उतना ही शीघ्र यात्री को प्रभु–दर्शन करा सकेगा। क्या टूटी मोटर मालिक को यथास्थान पहुँचा सकती है ? वह तो मार्ग में ही उसे पटक देगी, क्या मरियल टट्टू सवार को घर पहुँचायेगा ? नहीं, वह तो उसे भयावने जंगल ही में छोड़ देगा। सवारी अच्छी ही होनी चाहिये। इसीलिए भक्त प्रार्थना करता है–

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं
त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम।
मह्यं नमन्तां
प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण
पृतना जयेम।।

(ऋ. 10–128–1)

"हे अग्नि–स्वरूप प्रभो ! जीवन के संग्रामों में मेरे अन्दर तेज और चमक हो। तुम्हारी ज्योति को जगाते हुए हम शरीर को पुष्ट करें। चारों दिशाएँ हमारे आगे झुक जायें। आप हमारे अध्यक्ष बनें ताकि सब प्रकार के विरोधी वर्ग को हम पराजित कर सकें।"

इसलिए शरीर का स्वस्थ और पुष्ट होना नितान्त आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य भी है। *क्रमशः*

दुःखद समाचार

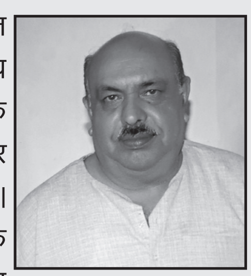

दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि, आर्यसमाज कण्डाघाट के माननीय मंत्री श्री पुनीत कपूर जी के पूज्य पिता श्री सुरजीत राय कपूर जी का स्वर्गवास दिनांक 03/01/2026 को हो गया है। श्री सुरजीत राय कपूर जी का जन्म दिनांक 09/02/1948 को हुआ था। उनका परिवार आर्य समाज कण्डाघाट के संस्थापक परिवार से संबंध रखता है। स्वर्गीय श्री सुरजीत राय कपूर जी के पूज्य पिता, स्वर्गीय श्री अम्बा प्रसाद जी, आर्य समाज कण्डाघाट के संस्थापक सदस्यों में से एक रहे हैं।

श्री सुरजीत राय कपूर जी का जीवन सादगी, सेवा और समाज के प्रति समर्पण का प्रतीक रहा। उनके निधन से न केवल उनके परिवार को अपितु आर्यसमाज कण्डाघाट को अपूरणीय क्षति हुई है।

ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

गतांक से आगे...

प्रखर राष्ट्रवादी ऋषि दयानन्द की राजनैतिक अवधारणा

● जगदीश आर्य

राष्ट्रपति की योग्यता

स्वामी दयानन्द ने राष्ट्रपति की योग्यता का मापदण्ड इस प्रकार रखा है–"राष्ट्रपति को अपने प्रभाव से 'विद्युत्', 'वायु', 'सूर्य', 'सोम', धर्म प्रकाशक, धनवर्द्धक, ऐश्वर्यवान्, जितेन्द्रिय, वेदज्ञ, दृढोत्साही तथा अठारह व्यसनों से दूर रहने वाला होना चाहिये। अठारह व्यसन इस प्रकार हैं–काम से दस और क्रोध से आठ।

काम से उत्पन्न व्यसन–(1) मृगया, (2) अक्षक्रीड़ा, (3) दिन में सोना, (4) काम–कथा या दूसरे की निन्दा करना, (5) स्त्रियों का अतिसंग, (6) मादकद्रव्यों का सेवन, (7) अतिशय गाना (8) वाद्य–व्यसन, (9) वृथा इधर–उधर घूमना, (10) नाचना और इनका सुनना तथा देखना।

क्रोध से उत्पन्न व्यसन–(1) पैशून्य, अर्थात् चुगली करना, (2) बलात्कार से किसी स्त्री से बुरा काम करना, (3) द्रोह रखना, (4) ईर्ष्या, (5) असूया–दोष में गुण और गुण में दोष देखना, (6) अर्थ दूषण, (7) कठोर वचन बोलना, (8) बिना अपराध दण्ड देना।

विश्व के इस बदलते हुए माहौल में इन दोषों से बचना मुश्किल–सा तथा अव्यावहारिक–सा लगता है। लेकिन यह अकाट्य सत्य है कि स्वच्छ एवं धर्मपूर्ण प्रशासन के लिए यह परमावश्यक है। इन दोषों के रहते कोई भी प्रशासन नैतिक नहीं रह सकता।

सभाध्यक्ष की दिनचर्या

जहाँ स्वामीजी ने राष्ट्रपति की योग्यता को महत्त्व दिया है वहीं उन्होंने उनके दैनिक कार्यों को भी प्रमुखता दी है। साधारणतः महापुरुषों के दैनिक कार्यकलापों को जहाँ अनदेखा कर दिया जाता है, वहाँ ऋषि ने इसके महत्त्व को अपनी दृष्टि से ओझल नहीं किया है। राष्ट्राध्यक्ष की दिनचर्या सामान्य नागरिक से बिल्कुल अलग होनी चाहिये, ताकि जन–जीवन पर उसका सुन्दर प्रभाव पड़ सके। सत्यार्थप्रकाश में 'मनु' का हवाला देकर, राष्ट्रपति की दिनचर्या इस प्रकार लिखी है–

"जब पिछली प्रहर रात्रि रहे, तब उठ, शौच और सावधान होकर परमेश्वर का ध्यान, अग्निहोत्र, और भोजन करके भीतर सभा में प्रवेश करे। वहाँ खड़ा रह कर जो प्रजा जन उपस्थित हों उन्हें मान्य देवे और उनको छोड़ कर मुख्यमंत्री के साथ राज–व्यवस्था कर, विचार करे। (स. प्र. छठा समु)।"

जोधपुर महाराजा को जो दिनचर्या बताई है उसमें विशेष यह है कि "दिन में 10 बजे और सायंकालीन भोजन 6 बजे करना–दिन में न सोना और रात्रि में 11 बजे तक अवश्य सो जाना। प्रति दिन सवा 6 घन्टे राजकार्य में लगाना चाहिये। प्रातः समय योगाभ्यास की रीति से ध्यान करना।"–द्रष्टव्य, ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन, पत्र सं० 459 और 563।

7. तीन प्रकार के संसदों की कल्पना

स्वामी दयानन्द ने व्यक्तिविशेष को राजा नहीं माना है। उनकी परिकल्पना में संसद ही सर्वोच्च सत्ता है, जिसे राजा कहा जाना चाहिये। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वे लिखते हैं–'**तीन प्रकार की सभा को ही राजा मानना चाहिये, एक मनुष्य को कभी नहीं।**' ऋषि की राज्य विषयक यह कल्पना बहुत क्रांतिकारी है। जिस पृष्ठभूमि में ऋषि ने यह क्रांतिकारी घोषणा की, उस समय भारत की कौन कहे, सारे विश्व में, व्यवस्था में व्यक्ति ही प्रमुख था। भारत में उस समय ब्रिटिश सरकार का प्रतिनिधि, जिसे 'वायसराय' कहा जाता था, शासक था। इस ब्रिटिश राज्य में सूर्य अस्त होता ही नहीं था। भारत में तो सन् 1857 का प्रथम स्वातंत्र्य–युद्ध संगीनों और तोपों के बल पर दबा दिया गया था। आतंक का दबदबा था, ऐसे संत्रास के माहौल में, ऋषि दयानन्द को यह घोषणा उनकी क्रान्तदर्शी राष्ट्रीयता है। यही कारण है कि वे अपने पूर्ववर्त्ती एवं समकालीन दार्शनिकों व सुधारकों से भिन्न हैं, जिनकी राजनैतिक दृष्टि लगभग शून्य है।

ऋग्वेद में तीन संसदों का वर्णन आया है। **"त्रीणी राजाना विदथे पुरूणि परिविश्वानि भूषथ संदासि।"** (ऋ. मं. 3, सू. 30, मंत्र 6)। प्रजा की सुख–समृद्धि एवं विज्ञान की उन्नति के लिये जिन तीन सभाओं का उल्लेख किया गया है, वे इस प्रकार हैं– (1) विद्यार्य सभा (2) धर्मार्य सभा और (3) राजार्य सभा।

विद्यार्य सभा–राष्ट्र में शिक्षा का प्रबंध करे।

धर्मार्य सभा–न्याय विभाग का प्रबंध करे, (न्यायपालिका)।

राज्यार्य सभा–प्रशासन को नियंत्रित करे। शिक्षाविभाग को, न्यायपालिका एवं कार्यपालिका से स्वतंत्र रहना चाहिये, ऐसा ऋषि का अभिमत है।

सांसदों द्वारा शपथ ग्रहण

"सम्य सभा मे पाहि ये च सभ्यः सभासदः।" (अथर्व. 19.55.6) सभासद, सभा को इस प्रकार सम्बोधित करें–"हे सभा के योग्य सभासद ! मैं सभा की धर्मयुक्त व्यवस्था का पालन करुँगा।" इस मंत्र में तीन शब्द आये हैं–'सभा' 'सभ्य' एवं 'सभासद'। विधान संस्था को 'सभा', सभा के सदस्यों को 'सभ्य' तथा सभाभवन में उपस्थित सदस्यों को 'सभासद' कहा गया है। सभासदों में सब प्रकार के परिषदों, सामित्यों (विशेष प्रकार की समितियों के सदस्य) – अंग्रेज़ी का Committee इसी शब्द से बना है–वेद में 'सभा' और 'समिति' अलग–अलग व्याख्यातित हैं। देखें–**"सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरी संविदाने।"** (अथर्व. 9.12.1)–अर्थात् प्रजापति (राजा अथवा शासनशक्ति) की दो कन्यायें 'सभा' और 'समिति' हैं। ये दोनों मेरी रक्षा करें। ये दोनों मेल करानेवाली हैं। –सभा में सभ्य, सत्य ही बोलने की शपथ लेता है– देखें–'**शिक्षाच्चारु वदानि पितरः संगमेषु**' – (वही मंत्र)। मैं सभाओं में 'चारु वदामि' सत्य ही बोलूँ।' 'सभा' और 'समिति' में ताल–मेल होना चाहिये, अर्थात् दोनों में संवैधानिक सम्बन्ध होने चाहिएँ।

जहाँ स्वामीजी ने राष्ट्रपति की योग्यता को महत्त्व दिया है वहीं उन्होंने उनके दैनिक कार्यों को भी प्रमुखता दी है। साधारणतः महापुरुषों के दैनिक कार्यकलापों को जहाँ अनदेखा कर दिया जाता है, वहाँ ऋषि ने इसके महत्त्व को अपनी दृष्टि से ओझल नहीं किया है। राष्ट्राध्यक्ष की दिनचर्या सामान्य नागरिक से बिल्कुल अलग होनी चाहिये, ताकि जन-जीवन पर उसका सुन्दर प्रभाव पड़ सके। सत्यार्थप्रकाश में 'मनु' का हवाला देकर, राष्ट्रपति की दिनचर्या इस प्रकार लिखी है-
'जब पिछली प्रहर रात्रि रहे, तब उठ, शौच और सावधान होकर परमेश्वर का ध्यान, अग्निहोत्र, और भोजन करके भीतर सभा में प्रवेश करे। वहाँ खड़ा रह कर जो प्रजा जन उपस्थित हों उन्हें मान्य देवे और उनको छोड़ कर मुख्यमंत्री के साथ राज-व्यवस्था कर, विचार करे। (स. प्र. छठा समु)।'

8. सांसदों की योग्यतायें

ऋषि दयानन्दजी की चिन्तनधारा में सांसदों में निम्न योग्यतायें चाहियें–

(1) वेदज्ञ (2) स्मृतियों का ज्ञाता (3) दण्डनीति, न्यायविद्या, एवं आत्मविद्या का जो अध्ययन किये हों। (4) योगाभ्यास द्वारा अपनी इन्द्रियों को नियंत्रित किया हो।

वर्तमान समय में, भारतीय संविधान में कोई विशेष योग्यता अपेक्षित नहीं है। उनमें केवल दो–तीन गुण होने चाहियें। (1) आयु 18 वर्ष (2) भारत का नागरिक हो। (3) स्वस्थ हो। शैक्षणिक योग्यता की कोई सीमा नहीं है। यही कारण है कि 'अंगूठा छाप' व्यक्ति भी विधानसभा या संसद् के सदस्य हो जाते हैं। चारित्रिक योग्यता का कोई प्रश्न ही नहीं है। दुष्ट चरित्र वाले व्यक्ति भी सांसद हो सकते हैं, और हैं भी। स्वामी दयानन्द की परिकल्पना में सदस्यों के पूर्ण शिक्षित होने के अतिरिक्त उनके चरित्र का दृढ़ होना परमावश्यक है।

9. सम्प्रभुता

जनतांत्रिक प्रणाली की विशेष गुणवत्ता उसकी जनता में निहित है। स्वामी दयानन्द का इस सम्बन्ध में स्पष्ट अभिमत है कि संविधान ही राज्याध्यक्ष है। संविधान का निर्माण ऐसे चरित्रवान् सांसदों के द्वारा होना चाहिये जो पक्षपातरहित हों। संविधान का निष्पक्ष होना परमावश्यक है। सांसदों एवं राजाध्यक्ष को नैतिकता के गुणों से परिपूर्ण होना चाहिये। उनका (स्वामी दयानन्द) का कहना था–

अनैतिकता की रोटी खाने से भीख माँग कर जीना अच्छा है। (संदर्भ ग्रन्थ–एच बी. शारदा लिखित–'लाइफ–ऑफ स्वामी दयानन्द'–पृष्ठ 283)। राष्ट्र का संविधान इतना परिपूर्ण होना चाहिये कि बाहरी शत्रु उसमें हस्तक्षेप करने का साहस भी न कर सकें। ऋषि दयानन्द ने राजा (संविधान) को विद्युत् के समान शक्तिशाली माना है। जैसे विद्युत्, अंधकार को दूर करता है–वैसे ही सभाध्यक्ष या संविधान प्रजा के हृदय को नैतिकता के गुणों से प्रकाशमान कर दे–(द्रष्टव्य–'सत्यार्थप्रकाश', छठा समुल्लास)। सम्प्रभुता में निम्नलिखित गुण होने चाहिये–

(क) संविधान पक्षपात रहित हो।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

ईश्वर-विचार

● पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

तीसरे दिन कथा होने को थी। भक्त पहले से ही जमा हो गये थे। उनमें से दो प्रेम से गा रहे थे ***"आनन्द सुधासार दया का पिला गया, भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया"*** प्रेम मंडली धीरे–धीरे बढ़ने लगी। स्वामी जी के आते ही सभी खड़े हो गये और प्रेम से गाने लगे–

भजन

हे प्रेममय प्रभो तुम्हीं सब के आधार हो।
तुमको परम पिता प्रणाम बार बार हो।।1।।
ऐसी कृपा करो कि हम सब धर्मवीर हों।
वैदिक पवित्र धर्म का जग में प्रचार हो।।2।।
सन्देश देश–देश में वेदों का दें सुना।
सम भाव और प्रेम का सब में प्रसार हो।।3।।
असहाय के सहाय हों उपकार हम करें।
अभिमान से बचें हृदय निर्भर उदार हो।।4।।
फूले–फले संसार की यह रम्य वाटिका।
कर्त्तव्य का अपने सदा हम को विचार हो।।5।।
स्वाधीनता के मन्त्र का जप हम सदा करें।
सेवा में मातृभूमि के तन–मन निसार हो।।6।।

स्वामी जी–आज का भजन कितना सुन्दर है। 'प्रभो सब के आधार हो'। आज सभी मंगलमय भगवान् के गुणों पर हम विचार करेंगे। सृष्टि को देखने से पता चलता है कि यह बड़ी अद्भुत विचित्र और सुख देने वाली सृष्टि है, ऐसी सृष्टि का बनाने वाला भी बड़ा अद्भुत, विचारवान्, दयालु और ज्ञानी होना चाहिये। दूर क्यों जाइये। अपने शरीर से ही आरम्भ कीजिये। हमारे शरीर में आँखें, कान, नाक, मुँह, खाल आदि कैसी विचित्र चीजें हैं। हम आँख से देखते हैं, कान से सुनते हैं, नाक से सूँघते हैं, खाल से कोमल, कठोर, ठण्डा, गरम जानते हैं। जीभ से मीठा, कड़वा, खट्टा, कसैला चखते हैं। आँख, कान, नाक, त्वचा और जीभ का नाम देव भी है और इन्द्रिय भी। इन को **'देव'** इसलिये कहा कि इनके द्वारा हमें ज्ञान मिलता है। इन को **'इन्द्रिय'** इसलिए कहते हैं कि जीव का नाम 'इन्द्र' है। आँख, कान आदि जीव के ज्ञान प्राप्त करने के लिए साधन हैं, इन सब का बनाने वाला महादेव, देवों का देव परमदेव है। उसी को महेश्वर या परमेश्वर भी कहते हैं।

आँख, कान आदि हमारे हैं परन्तु हम ने इन को बनाया नहीं। हम में आँख, कान, नाक आदि बनाने का न ज्ञान है न शक्ति। जैसे मनुष्य के नाक, कान आदि हैं उसी प्रकार कुत्ते, बिल्ली, चूहा, चींटी आदि के भी तो आँख, कान, नाक, आदि हैं। जैसे पशु–पक्षी अपनी इन्द्रियों के बनाने में असमर्थ हैं इसी प्रकार मनुष्य भी अपनी इन्द्रियों को बना नहीं सकता। माता के पेट से जब बच्चा पैदा होता है तो उसके नाक, कान, आँखें सभी होती हैं। भैंस के बच्चे के भी, और कुत्ते, बिल्ली या सुअर के बच्चे के भी। बच्चे की माता को तो आँख बनाने का ज्ञान नहीं वह तो खिलौना भी नहीं बना सकती। ऐसी उत्तम आँखें बनाना तो उसके लिये सर्वथा असम्भव है।

ये सुन्दर इन्द्रियाँ किसने बनाई ? ईश्वर ने। ईश्वर कैसा है ? परम ज्ञानी, बड़ा शक्ति वाला। तभी तो उसने ऐसा अच्छा शरीर बनाया। यदि ईश्वर आँख, कान न देता तो हम कैसे देखते ? कैसे चलते, फिरते ? कैसे खाते–पीते ? कैसे आनन्द करते ? क्या कभी तुमने अपनी सूरत देखी है ? शीशे में देखो। आँख की पुतली कितनी साफ है और कितनी सुन्दर। फिर उसकी रक्षा के लिये पलक है। यदि आँख होती और पलक न होते तो आँख में धूल चली जाती। जब कोई कीड़ा आँख पर आक्रमण करता है तो पलक झट से बन्द हो जाते हैं। ईश्वर जानता है कि आँख पर अगर पलक न हो तो आँख पर आफ़त आ सकती है। इसलिये ईश्वर ने पलक बनाये। फिर एक और बात सोचो, अगर आँख हो और सूरज न हो तो क्या आँख देख सकती है ? कुछ नहीं देख सकती। अंधेरे में तो आँख को काला, पीला, लम्बा, छोटा भी दिखाई नहीं देता इसलिये ईश्वर ने आँख की सहायता के लिए ही सूरज बनाया। सूरज सब आँखों की आँख है। हमारी सब की अपनी–अपनी आँखें हैं। मेरी अलग, आपकी अलग, पशु–पक्षियों की अलग परन्तु इन सब की मदद के लिये सूर्य तो एक ही है। वही एक सूरज भारतवर्ष के लिये भी, लंका के लिये भी, ब्रह्मदेश के लिये भी। सोचो तो सही कि वह ईश्वर कैसा महान् है जो छोटी से छोटी चींटी की आँख भी बनाता है और इतने बड़े सूरज को भी बनाता है जिस से हम सब की आँखों को रोशनी मिलती है।

ऐसे दयालु ईश्वर का ध्यान तो सभी को करना चाहिये। हम को कोई अच्छी चीज़ दे तो हम उसका उपकार मानते हैं। आप कुत्ते को रोटी का टुकड़ा डाल दीजिये, वह धन्यवाद देता हुआ पूँछ हिलायेगा, आपसे प्रेम करेगा और आपके साथ–साथ फिरेगा। जब कुत्ता भी इतनी बात समझता है तो हम सब को ईश्वर का बहुत बड़ा उपकार मानना चाहिये जिसने रोशनी के लिये सूरज, सूँघने के लिये हवा, पीने के लिये पानी और खाने के लिये अनेक प्रकार के फल, फूल, अन्न आदि उगाये।

अवतार लेने का अर्थ है कहीं से नीचे उतरना ! लोगों ने अज्ञान से यह मान लिया है कि आसमान के ऊपर बहिश्त है। ईश्वर वहीं रहता है और जब दुनिया को ज़रूरत होती है तब यह किसी न किसी रूप में नीचे उतर आता है। श्री रामचन्द्र, श्रीकृष्ण आदि अनेक महापुरुषों को लोगों ने भूल से ईश्वर का अवतार कहना प्रारम्भ कर दिया। यह अविद्या की बात संसार में एक बार फैल गई। कई पशुओं को भी ईश्वर का अवतार कहा जाने लगा। जैसे मच्छ अवतार, कच्छ अवतार, वाराह यानी सूअर का अवतार ! और इनके विषय में कपोल कल्पित कहानियाँ गढ़ ली गईं। किसी ने कहा कि रावण को मारने के लिए राम ने अवतार लिया। किसी ने कहा कंस को मारने के लिए कृष्ण ने अवतार लिया। किसी ने कहा, पृथ्वी को निकालने के लिए शूकर का अवतार हुआ। किसी ने यह नहीं सोचा कि सर्वव्यापक ईश्वर तो सब जगह है, वह तो आकाश में भी है और ज़मीन पर भी है। अगर ज़मीन पर न होता तो आसमान से उतरता, वह तो नित्य हर घड़ी सृष्टि बनाता रहता है। मूर्ख लोग समझते हैं कि रावण कंस आदि को मारने के लिए बड़ी शक्ति चाहिए। मनुष्य में ऐसी शक्ति कहाँ जो इनको मार सके।

रामपदार्थ–स्वामी जी ! यह तो हमारी समझ में आ गया कि सृष्टि को बनाने वाला बड़ा प्रतिभाशाली, महाज्ञानी, महाशक्तिशाली व श्रेष्ठ है पर ईश्वर हम को दिखाई तो नहीं देता। वह कैसा है ? कहाँ रहता है ? इस पर हम को उपदेश देने की कृपा करें।

स्वामी जी–इतना तो तुम मान गये। वह हम को दिखाई नहीं पड़ता। ईश्वर निराकार है उसका कोई आकार नहीं। वह नीला नहीं, पीला नहीं, काला नहीं, सफ़ेद नहीं, मोटा नहीं, पतला नहीं। आकार वाली चीज़ आँखों से मोटी होगी तभी तो आँखें उसको देख सकेंगी। साकार चीज़ें सब स्थूल होती हैं। उनके सिरे होते हैं, हर आकार वाली चीज़ के सिरे हैं। कुर्सी, मेज़, मकान, पहाड़, नदी सब की हद है। ईश्वर अनन्त है वह सब से बड़ा और सब जगह व्यापक है इसलिए वह निराकार है। जो लोग ईश्वर को साकार और मूर्तिमान् समझ कर उसको देखने की कोशिश में लगे हैं वे मूर्ख हैं और अपने को धोखे में डालते हैं। ईश्वर न कभी किसी को हाड मांस की बनी आँखों से दीखा है, न दीखेगा। ईश्वर को तो ज्ञान की आँखों से ही देखा जा सकता है।

आँख कान मुँह मूंद
कर नाम निरंजन ले।
भीतर के पट जब खुलें,
बाहर के पट दे।।

इसलिए ईश्वर की महान् सृष्टि पर विचार करके ही ईश्वर का अनुमान हो सकता है।

याद रखो कि ईश्वर न साकार है, न आकार ही ले सकता है, न उसको आकार लेने की ज़रूरत है। ईश्वर अवतार नहीं लेता। ईश्वर अजन्मा है, न जन्म ले, न मरे। उसको जन्म मरण के, बन्धन में आने की ज़रुरत नहीं। वह एकरस और निर्विकार है इसलिए वेदों में कहा है–

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमस्नाविरꣳ
शुद्धमपापविद्धम्।

{यजुर्वेद अध्याय 40, मन्त्र 8}

स पर्य्यगात् = वह सर्वव्यापक है। **शुक्रम्** = प्रकाशवान् है। **अकायम्** = निराकार, शरीर रहित है। **अस्नाविरम्** = नाड़ी नस के बन्धन से बाहर है। **शुद्धम्** = शुद्ध है। **अपापविद्धम्** = पाप से दूर है।

शिवदत्त–यह तो मेरी समझ में आ गया कि ईश्वर निराकार है पर मेरी समझ में यह नहीं आया कि वह अवतार क्यों नहीं लेता ? इतने अवतार माने जाते हैं क्या वे झूठे हैं ? ईश्वर सर्वशक्तिमान् ठहरा, जहाँ वह इतने बड़े–बड़े काम करता है वहाँ अवतार भी क्यों नहीं ले लेता।

स्वामी जी–ध्यान से विचार करो, तुम्हारी समझ में आ जावेगा। अवतार के बारे में ये तीन बातें याद रखो–

ईश्वर अवतार नहीं लेता–पहली बात।

ईश्वर अवतार नहीं ले सकता–दूसरी बात।

ईश्वर को अवतार की ज़रूरत नहीं–तीसरी बात।

अवतार लेने का अर्थ है कहीं से नीचे उतरना ! लोगों ने अज्ञान से यह

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

गतांक से आगे...

भारतीय नवजागरण और स्वामी दयानन्द सरस्वती

● डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री

12. शुद्धि आन्दोलन—शुद्धि आन्दोलन का विचार स्वयं स्वामी दयानन्द का था। शुद्धि का धार्मिक अर्थ है–(i) विधर्मियों को हिन्दू धर्म में दीक्षित करना। (ii) जिन हिन्दुओं ने किसी समय दूसरा धर्म ग्रहण कर लिया था, उन्हें या उनकी सन्तानों को फिर से हिन्दू धर्म में सम्मिलित करना। शुद्धि का प्रश्न सबसे पहले स्वामी दयानन्द ने पंजाब में लुधियाना में उठाया। रामशरण नामक एक ब्राह्मण एक मिशनरी स्कूल में शिक्षक थे। वे ईसाई होने जा रहे थे। लुधियाना के कुछ हिन्दू स्वामी जी से मिले और उन्हें ईसाई होने से बचाने को कहा। स्वामीजी ने रामशरण को धर्म का मर्म समझाया और उसने ईसाई होने का विचार त्याग दिया। इस घटना ने पंजाब में मिशनरियों के धर्म प्रचार और धर्म परिवर्तन के आन्दोलन की ओर स्वामीजी का ध्यान खींचा। अगले छः महीनों के दौरान उन्होंने इस समस्या के बारे में लोगों से चर्चा की और इस पर काफी विचार किया। जालन्धर में इन्होंने शुद्धि के बारे में प्रवचन दिया और एक ईसाई को शुद्धि के द्वारा हिन्दू धर्म में परिवर्तित किया और भी कई ऐसे मामले थे। जिस समय स्वामी दयानन्द अमृतसर में थे, उस समय मिशन स्कूल के 40 छात्रों ने अपने को बिना बप्तिस्म वाला ईसाई कहना शुरू किया। वे लोग पूरी तरह ईसाई धर्म के प्रभाव में थे। उन्होंने प्रेयर मीटिंग नामक एक संस्था बना ली। स्वामीजी ने इन लोगों को भी पुनः हिन्दू धर्म की ओर लौटा लिया। **पादरी रेवरेंड वेयरिंग** ने क्षुब्ध होकर पण्डित खान सिंह के साथ स्वामीजी का शास्त्रार्थ कराया। **पण्डित खान सिंह** ने बारह साल पहले ईसाई धर्म ग्रहण किया था। स्वामीजी से बात करने पर पण्डित खान सिंह उनसे इतने प्रभावित हुए कि उनके अनुयायी बन गए। मिस्टर वेयरिंग स्वामीजी को इस तरह विजय प्राप्त करके कैसे जाने देते? उन्होंने कलकत्ता से **रेवरेण्ड के. एन. बनर्जी** को स्वामीजी से शास्त्रार्थ करने के लिए बुलाया। किन्तु बनर्जी अपनी पुत्री की बीमारी का बहाना करके नहीं आ सके। इस बीच कुछ ईसाई फिर से हिन्दू हो गए। इन कारणों से स्वामीजी ने शुद्धि के कार्यक्रम में सक्रिय दिलचस्पी ली। इन घटनाओं से पंजाब के आर्य समाजियों को प्रेरणा मिली और **शुद्धि–आन्दोलन** दूर–दूर तक फैला। ईसाई धर्म प्रचारकों ने 1880 के दशक में स्वामीजी के **शुद्धि–आन्दोलन** का पूरा प्रभाव महसूस किया। स्वामीजी के इस कार्यक्रम से पंजाब के हिन्दुओं में स्वामीजी का प्रभाव और उनकी लोकप्रियता बहुत अधिक बढ़ गई। इस प्रभाव को अमेरिका के थियोसोफिस्टों द्वारा स्वामीजी को भेजे गए पत्र ने और सुदृढ़ किया। कर्नल अल्कॉट और मैडम ब्लैवेट्सकी ने अपने पत्रों में स्वामीजी को लिखा था कि पश्चिम में बहुत से ईसाई अपने धर्म से असन्तुष्ट हैं और वे अपने आध्यात्मिक समाधान के लिए भारतीय धर्म की ओर उन्मुख हो रहे हैं। **{वही, पृष्ठ–99–101}**

शुद्धि आन्दोलन ने पहले पंजाब में और फिर सारे उत्तर भारत में प्रबल रूप ग्रहण किया। जम्मू–कश्मीर में 10,000 लोग आर्यसमाज में शामिल हो गए। सियालकोट में दूसरी जाति के 3,600 लोगों की शुद्धि की गई। **पण्डित रामभज दत्त** के नेतृत्व में **"भारत शुद्धि सभा"** ने उन हज़ारों लोगों को फिर से हिन्दू बनाया जो ईसाई या मुसलमान हो गए थे। लाहौर में मेहतर और चमारों के बीच **आर्यसमाज** ने यही काम किया। **रोशनलाल, सत्यानन्द** और **राधाकृष्ण** जैसे नेताओं ने सभी जाति के हिन्दुओं को समान अधिकार दिये जाने पर ज़ोर दिया। उत्तर प्रदेश में भी बहुत से लोगों की शुद्धि करके फिर हिन्दू बनाया गया। आर्यसमाज ने भारतीय समाज से अस्पृश्यता का कलंक मिटाने की दिशा में बहुत काम किया। कई ईसाईयों और मुसलमानों को आर्य–धर्म में शामिल किया गया। **श्री आर.ए. डिकी** ने, जो जन्म से ईसाई थे, आर्य–धर्म स्वीकार कर लिया। संक्षेप में, शुद्धि–आन्दोलन ने दलित जातियों का दर्जा ऊँचा किया और भारतीयों में ऐसी राष्ट्रीय भावना पैदा की जिससे कि वे विदेशी धर्म के मुकाबले अपने धर्म की श्रेष्ठता समझने लगे। दलित जातियों में उत्थान का आन्दोलन बहुत तेज़ी से फैलने लगा। लाला लाजपत राय ने इस आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने कई स्थानों का दौरा किया तथा जगह–जगह भाषण दिए। शुद्धि आन्दोलन की काफी आलोचना हुई। किन्तु स्वामीजी के अनुयायियों ने उसकी चिन्ता नहीं की। आर्यसमाजी पूरी तरह राष्ट्रवादी थे उनके दिल में किसी विदेशी धर्म या शासक के लिए कोई स्थान नहीं था। वे यह चाहते थे कि भारत सिर्फ भारतीयों का होना चाहिए। शुद्धि का आन्दोलन एक पूरी जाति की इस उत्कट इच्छा का द्योतक था कि उसे अपनी खोई शक्ति वापस मिले और उसमें वृद्धि हो। स्वामीजी का विचार था कि हिन्दू जाति में एकता उत्पन्न होगी तो वह शक्तिशाली बनेगा, लोकतांत्रिक बनेगा और आन्तरिक कलह के कारण राष्ट्रोन्नति के मार्ग में पड़ने वाली बाधायें भी दूर होंगी। शुद्धि–आन्दोलन की सफलता का सारा श्रेय स्वामी दयानन्द और उनके आर्यसमाज को है। उन्होंने हिन्दू–समाज की कुप्रथाओं और रुढ़ियों को तोड़ा। अस्पृश्यता को खत्म करने के लिए आर्यसमाज के आन्दोलन ने कांग्रेस की जड़ों को मजबूत किया। सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण की बुनियाद पर आर्यसमाज ने जो मोर्चा बनाया उसने अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़ाई में भारत की शक्ति बढ़ाई। **{वही, पृष्ठ–101–103}**

13. स्त्री–अधिकारों का समर्थन— स्वामी दयानन्द जब कर्म क्षेत्र में उतरे उस समय समाज में स्त्रियों की दशा बड़ी दुखःद थी। दयानन्द ने जिस हिन्दू समाज में काम शुरू किया उसमें स्त्रियाँ अन्याय की शिकार थीं। इस्लाम और ईसाई धर्म में स्त्रियों ने इससे भी अधिक कष्ट उठाये थे, लेकिन फिर भी हिन्दू समाज में स्त्रियों की स्थिति वैसी अच्छी नहीं थी जैसी कि वैदिक काल में थी। प्राचीन काल में शिक्षा और विवाह के मामले में स्त्रियों को पुरुषों के साथ समानता प्राप्त थी। ऋग्वेद में स्त्री के कन्या, पत्नी और माता, इन तीनों अवस्थाओं में प्राप्त अधिकारों का वर्णन किया गया है। कन्या के रूप में उसे संरक्षण और पालन–पोषण के वही अधिकार प्राप्त थे जो किसी बालक को थे। शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों को समान अधिकार के साथ ही उन्हें अपने रुचि के विषय में अभिलषित अवसर मिलते थे। उनका विवाह वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार होता था। विवाह के लिए कन्या की न्यूनतम आयु 16 वर्ष और पुरुष के लिए 25 वर्ष थी। अपने जीवन–साथी के चुनाव में दोनों को समान स्वतंत्रता और अवसर थे। किन्तु स्वामी जी के समय में स्त्री समाज और परिवार में अपना सम्मानपूर्ण स्थान खो चुकी थी। वे पर्दा करतीं थीं और पुरुषों पर पूर्णतः निर्भर थीं। बाल–विवाह का चलन था और एक पत्नी के स्थान पर पुरुष कई पत्नियाँ रखते थे। स्त्रियों को वेद पढ़ने या शिक्षा का अधिकार नहीं था। विधवाओं की स्थिति और अधिक दयनीय थी। विधुर पुरुष अनेक बार विवाह कर सकता था, किन्तु स्त्री बाल विधवा होने पर भी पुनर्विवाह नहीं कर सकती थी। वह सारा जीवन वैधव्य जीवन भोगने को बाध्य थी। सम्भव है कि किन्हीं कारणों से हिन्दुओं ने इन प्रथाओं का निर्माण किया हो किन्तु इन प्रथाओं के बने रहने का अब कोई औचित्य नहीं था। स्वामी दयानन्द ने अपनी पुस्तकों में स्त्रियों की ऐसी दुःस्थिति के बारे में तर्कपूर्ण ढंग से विचार किया। उन्होंने वेदों और शास्त्रों से प्रमाण देकर सिद्ध किया कि स्त्रियों को भी पुरुषों के समान वेद पढ़ने का अधिकार है। उन्होंने पर्दा प्रथा छोड़ने, स्त्री–पुरुषों में समानता स्थापित करने और लड़कियों की शिक्षा प्राप्त करने पर बल दिया। स्वामीजी ने देखा कि भारत राष्ट्र की दुर्बलता का एक प्रमुख कारण यह भी है कि यहाँ की नारी जाति निर्बल है। वे चाहते थे कि वैदिक काल में स्त्री को जो गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था वह उसे फिर से प्राप्त हो। उन्होंने स्त्रियों की पूर्ण विमुक्ति का समर्थन किया। भारत का पुनरुत्थान स्त्री–शिक्षा के द्वारा ही हो सकता था। जब तक स्त्रियाँ स्वयं शिक्षित नहीं होगीं और बच्चों को गोद में बिठा कर भारत के गौरवपूर्ण अतीत और भावी भारत के गौरवपूर्ण भविष्य का पाठ नहीं पढ़ायेंगी, तब तक उनमें देशभक्ति की भावना नहीं होगी। जब तक स्त्रियाँ अपने पतियों के समान ही अपने देश को प्यार करना नहीं सीखेंगीं, तब तक भारत दुर्बल रहेगा। अतः स्वामीजी ने स्त्रियों के लिए समुचित ढंग की शिक्षा पर बल दिया। स्त्री–पुरुषों को समान शिक्षा देने की आवश्यकता बताते हुए उन्होंने कहा कि इनमें से यदि एक शिक्षित और एक अशिक्षित रहेगा तो घर में देवासुर संग्राम जैसी अशांति रहेगी। स्त्रियों को व्याकरण, धर्मशास्त्र, गणित, वैद्यक और कला की शिक्षा दी जानी चाहिए। इसके बिना सही–गलत का, पति तथा अन्य लोगों के साथ उचित–अनुचित व्यवहार का, गृहस्थी के कार्य संचालन का, पाकशास्त्र का और आरोग्य का रहस्य ज्ञान स्त्री को नहीं होगा। दयानन्द के इन्हीं विचारों और सिद्धान्तों के आधार पर अनेक स्कूल और कालेज स्थापित हुए। इनमें से कुछ हैं–कन्या महाविद्यालय जालंधर, हंसराज महिला महाविद्यालय, जालंधर, डी.ए.वी. कॉलेज कौर गर्ल्ज, बी.बी.के. डी.ए.वी. कालेज अमृतसर, डी.ए.वी. कालेज बटाला आदि। आर्य समाजियों ने स्त्री–शिक्षा के क्षेत्र में अगुवाई की और ये कार्य वे आज भी कर रहे हैं। **{वही, पृष्ठ–103–105}**

क्रमशः

अध्यापक आवास, स्टेशन रोड, अमेठी, (उत्तर–प्रदेश)–7303474301

गतांक से आगे...

आर्यसमाज दिग्दर्शन

● भद्रसेन

द्वितीय सत्संग

अजय, जगत के सामूहिक इस भजन से इस सत्संग का समारम्भ हुआ–

जय–जय पिता परम आनन्द दाता।
जगदादि कारण मुक्ति प्रदाता।।
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे।
सृष्टि का स्रष्टा तू धर्ता संहर्ता
सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना।
कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता।।
मै लालित व पालित हूँ पितृस्नेह का।
यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझ से ताता।।
करो शुद्ध निर्मल मेरे आत्मा को।
करूँ मै विनय नित्य सायं व प्रातः।।
मिटाओ मेरे भय आवागमन के।
फिरूँ न जन्म पाता और बिलबिलाता।।
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु ।
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता।
'अमी' रस पिलाओ कृपा करके मुझ को।
रहूँ सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता।।

पूर्व चर्चा को आगे बढ़ाते हुए मुन्शीराम ने पूछा, **"आर्य समाज का नाम रखने का क्या कोई विशेष अभिप्राय है ?"**

प्राध्यापक–हाँ, आर्य शब्द हमारे सारे साहित्य में आया है। इसका अर्थ है–अच्छा, भला और हर एक अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भलाई ही चाहता है और आर्य शब्द ऐसा है, जिसको हर स्थान, समय पर प्रयुक्त किया जा सकता है। ऐसा करने पर तब यह किसी रूप में भी बाधक नहीं बनता।

{**आर्य शब्द पर विचार 'सुसंगत जीवनपथ' और अविस्मरणीय स्मारक–आर्यसमाज में है।**}

समाज शब्द का सामान्य अर्थ है– संगठन और शास्त्रीय अर्थ है–समझदारों का समूह। तब उसका नियमों से अनुशासित होना एक स्वाभाविक बात तो जाती है क्योंकि नियमों के पालन से ही प्रत्येक संगठन–पल्लवित, पुष्पित, फलित होता है अतः आर्य समाज के नाम में ही इसके सारे सिद्धान्त अन्तर्निहित हैं।

उन्नति–यह कैसे ?

प्राध्यापक–पहली बात तो यह है कि यह संगठन आर्यपन=भलाई के लिए है अतः अच्छाई ही इसका लक्ष्य है तथा वे ही कार्य इसके लिए कर्त्तव्य हैं, जिन से भलाई हो।

दूसरी बात–अच्छाई, भलाई से ही कोई संगठन विकसित, संरक्षित, संगठित और स्थायी होता है।

तीसरी बात–आर्यपन = हर अच्छाई किसी के कर्म का फल है, जो किसी के करने पर ही होती है अतः कर्म और उसके फल पर विश्वास ही अच्छाई का आधार है।

कर्मफल व्यवस्था ही हमारी संस्कृति, सभ्यता का मूल आधार है क्योंकि संस्कृति के सारे (ईश्वर, जीव, धर्म, व्यवस्था आदि) तत्व इसकी ही व्याख्या हैं।

{**इस पर विशेष विचार भारतीयता का मूलाधार–कर्मफल व्यवस्था में है।**}

कर्मफल व्यवस्था पर विश्वास रखनेवाला कभी बुरा कर्म नहीं करेगा और न ही किसी कारण से हो जाने पर उसके फल से बचने के लिए किसी प्रकार की रिश्वत, पहुँच जैसे व्यर्थ के पचड़े मे पड़ेगा क्योंकि ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था सर्वथा अटल, अटूट, पूर्ण, सक्षम है। वस्तुतः हर तरह का भ्रष्टाचार वही करता है, जो कर्मफल व्यवस्था पर विश्वास नहीं करता। भलाई, अच्छाई का मूल है और मूल के सजीव होने पर ही पत्र–पुष्प फल सामने आते हैं।

अतः इस विवेचन से स्वतः यह स्पष्ट हो जाता है कि आर्य शब्द यहाँ हर बात की निश्चित दिशा तथा कसौटी है। अतः जो अच्छाई है उसको अपनाना और उसके लिए यत्न करना और जो अच्छा नहीं उसको छोड़ना, जैसे कि धूमपान, नशे, मांस, व्यभिचार, जुआ आदि। तभी तो कहा है–..... **अर्थो धर्म** मीमांसा 1, 1, 2 = **परहित सरिस धर्म नहीं भाई।**

यशपाल–देखिए ! आज वैज्ञानिक युग है, अतः उसकी हर बात सम्बद्ध, स्पष्ट है और तभी तो उसकी दोनों बातों को सभी बिना ननुनच के बर्तते हैं। क्या महर्षि की विचारधारा विज्ञान जैसी है?

प्राध्यापक–महर्षि की विचारधारा विज्ञान की पद्धति के अनुरूप, कार्यकारण से सम्बद्ध, तर्कसंगत, प्रमाण परिपुष्ट है। अतएव महर्षि हर सिद्धान्त की सिद्धि के लिए जहाँ शास्त्रों के प्रमाण देते हैं, वहाँ तर्क, परीक्षा, युक्ति का भी उतना ही प्रयोग करते हैं।

किसी शास्त्र या धर्म की समीक्षा में महर्षि ने उसमें वर्णित प्राकृतिक पदार्थों और उनकी व्यवस्था की ओर भी ध्यान दिया है। यदि उस वर्णन में प्राकृतिक व्यवस्था का उल्लंघन या विरुद्ध वर्णन है, तो महर्षि ने उसकी तीखी आलोचना की है अर्थात् महर्षि प्राकृतिक जगत् की व्यवस्था को सर्वथा मान्य मानते हैं।

महर्षि ने कहीं भी चमत्कारों, वरदानों का सहारा नहीं लिया जबकि भारतीय साहित्य में अनेकत्र यज्ञ, जप, योग, व्रत, मन्त्र, तन्त्र आदि को काम धेनु, कल्पवृक्ष, कल्पलता के रूप में हर इच्छा को पूरा करने वाला माना गया है। पुनरपि महर्षि ने एक भी शब्द ऐसा नहीं लिखा। इस प्रसंग की दृष्टि से महर्षि के निम्न विचार बिलकुल स्पष्ट हैं। जैसे कि–

(पूर्व) जो आग्नेयशास्त्र आदि विद्या लिखी है.. **(प्रश्न)** क्या ये देवताओं के मन्त्रों से सिद्ध होते थे? **(उत्तर)** नहीं, ये सब बातें जिनसे अस्त्रों–शस्त्रों को सिद्ध करते थे, वे 'मन्त्र' अर्थात् विचार से सिद्ध करते और चलाते थे और जो मन्त्र अर्थात् शब्दमय होता है, उससे कोई द्रव्य उत्पन्न नहीं होता ।

...........वैसा मन्त्र अर्थात् विचार से सब सृष्टि के पदार्थों का प्रथम ज्ञान और पश्चात् क्रिया करने से अनेक प्रकार के पदार्थ क्रिया कौशल उत्पन्न होते हैं। (समु. 11, पृ. 237)

एक और बात यह भी है कि विज्ञान का मूलमन्त्र है सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग में सर्वदा उद्यत रहना इस पर महर्षि ने अनेकधा बल दिया है।

ज्ञानसिंह–महर्षि की दृष्टि से धर्म का क्या अभिप्राय है ?

प्राध्यापक–महर्षि ने अपनी रचनाओं में यत्र–तत्र सर्वत्र जीवन को अच्छा बनाने की प्रक्रिया के रूप में धर्म प्रतिपादन किया है अर्थात् उन्हीं बातों का नाम धर्म है, जिनको अपनाने से व्यवस्था बने और जिसके कारण उससे सुख प्राप्त हो सके। तभी तो महर्षि ने लिखा है–

जो पक्षपात रहित न्याय सत्य का ग्रहण असत्य का सर्वथा परित्यागरूप आचार है, उसी का नाम धर्म और इससे विपरीत जो पक्षपात रहित अन्यायाचरण सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहण रूप कर्म है उसी को अधर्म कहते हैं।

{**धर्म सम्बन्धी महर्षि के अनेक वचन–सुसंगतजीवन पथ में हैं।**}

(सत्यार्थ 3,52)

भगवानदास–ऐसी स्थिति में महर्षि ने सारे साहित्य के आधार पर धर्म के क्या–क्या मूलमन्तव्य माने हैं?

प्राध्यापक–जब हम आर्यसमाज की दृष्टि से धर्म के मूल मन्तव्यों की बात करते हैं, तो हमारा सबसे पहले ध्यान ईश्वर की ओर जाता है क्योंकि–

ईश्वर–सभी एक स्वर से इस बात को स्वीकार करते हैं कि इस दुनिया को बनाने और चलाने वाला ईश्वर ही है। हम सब के भले के लिए ही ईश्वर ने सूर्य, वायु, जल, धरती और उसके अन्न, फूल, फल, वनस्पति, धातु, खनिज आदि पदार्थ दिए हैं। केवल ये भौतिक पदार्थ ही नहीं; अपितु जीवों के जन्म–मरण की व्यवस्था भी चलाता है अतः ईश्वर का सरल–स्पष्ट स्वरूप वही है जो दुनिया की सारी व्यवस्था के अनुरूप हैं जैसे कि ईश्वर के प्राकृतिक पदार्थ, कार्य सभी जगह हैं, अतः ईश्वर सर्वव्यापक है और तभी सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी, सर्वेश्वर, सर्वशक्तिमान और कर्मफल दाता है। सर्वव्यापक को एक सीमित आकार में बाँधा नहीं जा सकता अतएव आर्य समाज में ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं होती। यहाँ ईश्वर को सर्वान्तर्यामी मान कर हृदय मन्दिर में उसकी पूजा करनी–बताई जाती है। ईश्वर के ये कार्य अन्य कोई नहीं कर सकता, अतएव अन्य किसी देवी–देवता, पीर पैगम्बर, गुरु, अवतार को ईश्वर के रूप में नहीं माना जाता है। यही आर्यसमाज का पहला मूलमन्तव्य है।

विद्याधर–ईश्वर भक्ति से क्या अभिप्राय है?

प्राध्यापक–जिस ईश्वर ने हमारे भले के लिए एक से एक अद्भुत भौतिक पदार्थ दिए हैं उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना हर समझदार का काम है अतः भक्ति का सबसे अच्छा रूप यही है कि जिसके द्वारा हम अपने दिल से जुड़े शब्दों से ईश्वर का धन्यवाद कर सकें।

इसकी दूसरी उपयोगिता यह भी है कि ईश्वर जगत् का कर्त्ता होने से हमारा पिता भी है, भक्ति द्वारा हम अपना ईश्वर से निकट का सम्बन्ध भी अनुभव करें अतः भक्त और भगवान में निकट सम्बन्ध का अनुभव कराना ही भक्ति की खूबी है।

क्रमशः

182 शालीमार नगर,
होशियारपुर 146001

ईश्वर का सर्वोत्तम नाम–ओम् (ओ३म्)

{महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ–प्रकाश के महत्त्वपूर्ण अंश संकलक : भावेश मेरजा}

(ओ३म्) जो यह ओङ्कार शब्द है, यह परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो **अ, उ** और **म्** तीन अक्षर हैं, वे मिलकर एक (ओम्) समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं, जैसे – अकार से विराट्, अग्नि और विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। वेदादि सत्यशास्त्रों में उसका ऐसा ही स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरण–अनुकूल ये सब नाम परमेश्वर के ही हैं।

अब जिस प्रकार विराट् आदि नामों से परमेश्वर का ग्रहण होता है, वह प्रकार नीचे लिखे प्रमाणे जानो –

अथ 'ओङ्कार'–अर्थः

1. **विराट्**–'वि' उपसर्गपूर्वक **'राजृ दीप्तौ'** इस धातु से क्विप् प्रत्यय करने से **'विराट्'** शब्द सिद्ध होता है। **'यो विविधं नाम चराऽचरं जगद्–राजयति प्रकाशयति स विराट्'** = विविध अर्थात् जो बहु प्रकार के (चराचर) जगत् को प्रकाशित करे, इससे **'विराट्'** नाम से परमेश्वर का ग्रहण होता है।
2. **अग्नि – अंचु गतिपूजनयोः, अग, अगि, इण् गत्यर्थक** धातुयें हैं, इनसे **'अग्नि'** शब्द सिद्ध होता है। **'गतेस्त्रयोऽर्थाः – ज्ञानं गमनं प्राप्तिश्चेति, पूजनं नाम सत्कारः।' 'योऽञ्चति, अच्यतेऽगत्यङ्गतिएति वा सोऽयमग्निः'** = जो ज्ञान–स्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्त होने और पूजा के योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम **'अग्नि'** है।
3. **विश प्रवेशने** इस धातु से **'विश्व'** शब्द सिद्ध होता है। **'विशन्ति प्रविष्टानि भवन्ति सर्वाण्याकाशादीनि भूतानि यस्मिन्, यो वाऽऽकाशादिषु सर्वेषु भूतेषु प्रविष्टः स विश्व ईश्वरः'** = जिसमें आकाशादि सब भूत प्रवेश कर रहे हैं अथवा जो इनमें व्याप्त होके प्रविष्ट हो रहा है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम **'विश्व'** है।

इत्यादि नामों का ग्रहण अकार से होता है।

4. **'हिरण्यगर्भ' – 'ज्योतिर्वै हिरण्यं, तेजो वै हिरण्यम्** इत्यैतरेय–शतपथब्राह्मणे' (ऐतरेय ब्राह्मण 7.12, शतपथ ब्राह्मण 6.7.1.2) अथवा **'यो हिरण्यानां सूर्यादीनां तेजसां गर्भ उत्पत्तिनिमित्तमधिकरणं स हिरण्यगर्भः'** = जिसमें सूर्यादि तेजवाले लोक उत्पन्न होके जिसके आधार में रहते हैं अथवा जो सूर्यादि तेजः स्वरूप पदार्थों का गर्भ नाम (उत्पत्ति) और निवास–स्थान है, इससे उस परमेश्वर का नाम **'हिरण्यगर्भ'** है।
5. **वायु – वा गतिगन्धनयोः** इस धातु से **'वायु'** शब्द सिद्ध होता है। **(गन्धनं हिसनम्)। 'यो वाति चराऽचरं जगद्–धरति बलिनां बलिष्ठः स वायुः'** = जो चराचर जगत् का धारण, जीवन और प्रलय करता है और सब बलवानों से बलवान् है, इससे उस ईश्वर का नाम **'वायु'** है।
6. **तैजस – तिज निशाने** इस धातु से **'तेजः'** और इससे तद्धित करने से **'तैजस'** शब्द सिद्ध होता है। **(यः तेजोमयः तेजसां सूर्यादीनां च प्रकाशकः सः तैजस)** जो आप स्वयंप्रकाश और सूर्यादि तेजस्वी लोकों का प्रकाश करनेवाला है, इससे ईश्वर का नाम 'तैजस' है।

इत्यादि नामार्थ उकार से ग्रहण होते हैं।

7. **ईश्वर – ईश ऐश्वर्ये** इस धातु से 'ईश्वर' शब्द सिद्ध होता है। **'य ईष्टे सर्वैश्वर्यवान् वर्त्तते स ईश्वरः'** = जिसका सत्य विचार, शील, ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है, इससे उस परमात्मा का नाम **'ईश्वर'** है।
8. **आदित्य – दो अवखण्डने, (अवखण्डनंनामविनाशः)** इस धातु से 'अदिति' और इससे तद्धित करने से **'आदित्य'** शब्द सिद्ध होता है। **'न विद्यते विनाशो यस्य सोऽयमदितिः, अदितिरेव आदित्यः'** = जिसका विनाश कभी न हो (उसका नाम अदिति है, अदिति ही आदित्य है, इससे) उसी ईश्वर की **'आदित्य'** संज्ञा है।
9. **प्राज्ञ–ज्ञा अवबोधने, 'प्र'**–पूर्वक इस धातु से 'प्रज्ञ' और इससे तद्धित करने से 'प्राज्ञ' शब्द सिद्ध होता है। **'यः प्रकृष्टतया चराऽचरस्य जगतो व्यवहारं जानाति स प्रज्ञः, प्रज्ञ एव प्राज्ञः'** = जो निर्भ्रान्त ज्ञानयुक्त सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानता है, (वह प्रज्ञ है, प्रज्ञ ही प्राज्ञ कहाता है), इससे उसी ईश्वर का नाम **'प्राज्ञ'** है।

इत्यादि नामार्थ मकार से गृहीत होते हैं।

जैसे एक–एक मात्रा से तीन–तीन अर्थ यहाँ व्याख्यात किये हैं, वैसे ही अन्य नामार्थ भी ओङ्कार से जाने जाते हैं।

सच्चिदानन्द–स्वरूप

(अस भुवि) इस धातु से 'सत्' शब्द सिद्ध होता है। **'यदस्ति त्रिषु कालेषु न बाध्यते तत्सद् ब्रह्म'** = जो सदा वर्त्तमान अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान कालों में जिसका बाध न हो, उस परमेश्वर को 'सत्' कहते हैं।

(चिती संज्ञाने) इस धातु से 'चित्' शब्द सिद्ध होता है। **'यश्चेतति चेतयति संज्ञापयति सर्वान् सज्जनान् योगिनः तच्चित्परं ब्रह्म'** = जो चेतन–स्वरूप है तथा सब सज्जन जीवों और योगियों को चेताने और सत्य–असत्य का जनानेवाला है, इसलिये उस परमात्मा का नाम **'चित्'** है।

टुनदि समृद्धौ, आङ्पूर्वक इस धातु से **'आनन्द'** शब्द बनता है। **'आनन्दन्ति सर्वे मुक्ता यस्मिन् यद्वा यः सर्वाजीवानानन्दयति स आनन्दः'** = जो आनन्दस्वरूप, जिसमें सब मुक्त जीव आनन्द को प्राप्त होते और सब धर्मात्मा जीवों को आनन्दयुक्त करता है, इससे ईश्वर का नाम 'आनन्द' है।

इन तीनों शब्दों के विशेषण होने से परमेश्वर को **'सच्चिदानन्द– स्वरूप'** कहते हैं।

ईश्वर के अन्य कुछ प्रसिद्ध नाम

गणेश वा **गणपति – गण संख्याने,** इस धातु से 'गण' शब्द सिद्ध होता है, इसके आगे 'ईश' वा 'पति' शब्द रखने से 'गणेश' और 'गणपति शब्द' सिद्ध होते हैं। **'ये प्रकृत्यादयो जडा जीवाश्च गण्यन्ते संख्यायन्ते तेषामीशः स्वामी पतिः पालको वा स गणेशो गणपति वा'** = जो प्रकृत्यादि जड़ और जीव आदि सब प्रख्यात पदार्थों का स्वामी वा पालन करनेवाला है, इससे उस ईश्वर का नाम **'गणेश'** वा **'गणपति'** है।

ब्रह्मा – बृह बृहि वृद्धौ, इन धातुओं से **'ब्रह्मा'** शब्द सिद्ध होता है। **'योऽखिलं जगत् निर्माणेन बर्हति (बृंहति) वर्द्धयति स ब्रह्मा'** = जो सम्पूर्ण जगत् को रचके बढ़ाता है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम **'ब्रह्मा'** है।

विष्णु – विष्लृ व्याप्तौ, इस धातु से 'नु' प्रत्यय होकर 'विष्णु' शब्द सिद्ध हुआ है। **'वेवेष्टि व्याप्नोति चराऽचरं जगत् स विष्णुः परमात्मा'** = चर और अचररूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम **'विष्णु'** है।

शिव–शिवु कल्याणे, इस धातु से **'शिव'** शब्द सिद्ध होता है। **'बहुलमेतन्निदर्शनम्',** (धातुपाठ, चुरादिगण) इससे **'शिवु'** धातु माना जाता है, जो स्वयं कल्याणस्वरूप है और सबका कल्याण करनेवाला है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम **'शिव'** है।

ये सौ नाम परमेश्वर के लिखे हैं, परन्तु इनसे भिन्न भी परमात्मा के असंख्य नाम हैं। क्योंकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण–कर्म–स्वभाव हैं, वैसे उसके अनन्त नाम हैं। उनमें से प्रत्येक गुण–कर्म–स्वभाव का एक–एक नाम है। इससे ये मेरे लिखे नाम समुद्र के सामने बिन्दुवत् हैं; क्योंकि वेदादि शास्त्रों में परमात्मा के असंख्य गुण–कर्म–स्वभाव व्याख्यात किये हैं। उनके पढ़ने–पढ़ाने से उनका बोध हो सकता है, और अन्य पदार्थों का ज्ञान भी उन्हीं को पूरा हो सकता है जो वेदादि शास्त्रों को पढ़ते हैं।

परमेश्वर का कोई भी नाम अनर्थक नहीं, जैसे लोक में दरिद्री आदि के

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

ये सौ नाम परमेश्वर के लिखे हैं, परन्तु इनसे भिन्न भी परमात्मा के असंख्य नाम हैं। क्योंकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव हैं, वैसे उसके अनन्त नाम हैं। उनमें से प्रत्येक गुण-कर्म-स्वभाव का एक-एक नाम है। इससे ये मेरे लिखे नाम समुद्र के सामने बिन्दुवत् हैं; क्योंकि वेदादि शास्त्रों में परमात्मा के असंख्य गुण-कर्म-स्वभाव व्याख्यात किये हैं। उनके पढ़ने-पढ़ाने से उनका बोध हो सकता है, और अन्य पदार्थों का ज्ञान भी उन्हीं को पूरा हो सकता है जो वेदादि शास्त्रों को पढ़ते हैं।

☞ पृष्ठ 04 का शेष

प्रखर राष्ट्रवादी ऋषि...

(ख) संविधान नैतिकता के गुणों से परिपूर्ण हो।

(ग) संविधान विद्युत् के समान शक्तिशाली हो।

(घ) संविधान साम्राज्य का तेज, ब्रह्मवर्चस्व, उसका वीर्य शक्तिशाली होवे तथा 'यश' की वृद्धि करता रहे।

10. निर्वाचन प्रणाली–

वर्तमान जनतांत्रिक राजनीति में जन–प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार नहीं है। राजनीतिक दलों द्वारा मनोनीत व्यक्तियों को ही जनता चुन कर विधानसभाओं में भेजती है। जनता को यह अधिकार नहीं है कि स्वयं किसी को चुन कर विधानसभाओं में भेजे। इस देश की जनता को जन–तंत्र प्रणाली से प्रशिक्षित नहीं किया गया है। फलतः आज की चुनाव प्रणाली जन–तंत्र के नाम पर मखौल–एक नाटक बन कर रह गई है।

स्वामी दयानन्द ने जिस चुनाव–प्रणाली का समर्थन किया है, उसमें जन सामान्य को यह पूर्ण अधिकार है कि उन्हीं व्यक्तियों को विधानसभायों में भेजे जिनका चरित्र दृढ़ होवे, वे पूर्ण शिक्षित हों। मूर्खों को संसदों में न भेजें। उनका कथन है कि **"अज्ञानियों के सहस्रों–लाखों–करोड़ों मिल कर जो व्यवस्था करें, उसको कभी नहीं मानना चाहिये।"** ('सत्यार्थप्रकाश'–छठा समुल्लास)। म. गांधी ने भी बहुमत के आधार को कभी नहीं स्वीकारा है। पाश्चात्य विचारक श्री 'थोरो' ने भी इसी सिद्धान्त को माना है।

इन विधानसभाओं में दो प्रकार के सदस्य होंगे। राजपुरुष एवं प्रजापुरुष। 'प्रजापुरुष' का निर्वाचन जनता के मतों से होगा और 'राजपुरुष' राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत विशिष्ट व्यक्ति होंगे।

जन प्रतिनिधियों के द्वारा ही सभाध्यक्ष का चुनाव होता है। स्वामीजी ने ग्राम पंचायतों के माध्यम से, नीचे से चुनाव प्रणाली की रूपरेखा प्रस्तुत की है। स्वामी दयानन्दजी ने निर्वाचन प्रणाली में ग्राम राज व्यवस्था मानी है। उनका सुझाव है कि एक–एक –दस–दस ग्रामों के मुखिया सर्वसम्मति से कम से कम दस चरित्रवान् व्यक्तियों को अपना प्रतिनिधि चुनें–उन प्रतिनिधियों द्वारा पुनः चरित्रवान् व्यक्ति का चुनाव हो–उन्हें स्वामीजी ने 'सभापति' नाम से सम्बोधित किया है, यह व्यक्ति राजा सभा में जावे।

महात्मा गांधी तथा सर्वोदयवादी नेताओं ने जिस ग्राम–राज्य की कल्पना आज की है, ऋषि दयानन्द ने बहुत पहिले ही ग्राम–राज्य की कल्पना ही नहीं बल्कि उसकी रूपरेखा भी प्रस्तुत की है। स्वामीजी की सम्पूर्ण शासन व्यवस्था में ग्राम एक ईकाई है और किसान उसका महत्त्वपूर्ण 'घटक' है। उन्होंने किसानों को 'राजाओं का भी राजा' कहा है।

क्रमशः

'महर्षि दयानन्द निर्वाणशती स्मृति ग्रन्थ' से साभार

☞ पृष्ठ 05 का शेष

ईश्वर-विचार

मान लिया है कि आसमान के ऊपर बहिश्त है। ईश्वर वहीं रहता है और जब दुनिया को ज़रुरत होती है तब यह किसी न किसी रूप में नीचे उतर आता है। श्री रामचन्द्र, श्रीकृष्ण आदि अनेक महापुरुषों को लोगों ने भूल से ईश्वर का अवतार कहना प्रारम्भ कर दिया। यह अविद्या की बात संसार में एक बार फैल गई। कई पशुओं को भी ईश्वर का अवतार कहा जाने लगा। जैसे मच्छ अवतार, कच्छ अवतार, वाराह यानी सूअर का अवतार ! और इनके विषय में कपोल कल्पित कहानियाँ गढ़ ली गईं। किसी ने कहा कि रावण को मारने के लिए राम ने अवतार लिया। किसी ने कहा कंस को मारने के लिए कृष्ण ने अवतार लिया। किसी ने कहा, पृथ्वी को निकालने के लिए शूकर का अवतार हुआ। किसी ने यह नहीं सोचा कि सर्वव्यापक ईश्वर तो सब जगह है, वह तो आकाश में भी है और ज़मीन पर भी है। अगर ज़मीन पर न होता तो आसमान से उतरता, वह तो नित्य हर घड़ी सृष्टि बनाता रहता है। मूर्ख लोग समझते हैं कि रावण कंस आदि को मारने के लिए बड़ी शक्ति चाहिए। मनुष्य में ऐसी शक्ति कहाँ जो इनको मार सके। वे भूल जाते हैं कि ये थे तो सब मनुष्य ही। मनुष्य में एक से एक बढ़कर हो सकता है। ईश्वर के सामने तो कंस, रावण किसी की शक्ति बड़ी नहीं है। जिसने सूरज, चाँद बनाये, समुद्र और पहाड़ बनाये, शेर–चीते बनाये, कंस और रावण को बनाया उनको मारना ईश्वर के लिए कौन–सी बड़ी बात है। बड़े भयानक शेर रोज़ मरते रहते हैं। जब इनकी मौत आती है तो क्षण भर में टैं हो जाते हैं, क्या ईश्वर इन को तलवार बन्दूक लेकर मारने आता है। रावण को राम ने तीर से मारा, कंस आदि को कृष्ण ने पछाड़ कर गिराया। राम और कृष्ण वीर महापुरुष थे। उन्होंने रावण, कंस दुष्टों को मार गिराया। यह क्षत्रियों का काम है। राम और कृष्ण प्रतापी क्षत्रिय थे। यदि ईश्वर होते तो रावण और कंस के शरीरों में भी व्यापक होते और **एक क्षण में भीतर से ही उनकी जान ले लेते।** न लड़ाई की ज़रुरत थी न हथियार चलाने की।

क्रमशः

'गंगा ज्ञान सागर' सम्पादक प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु से साभार

☞ पृष्ठ 08 का शेष

ईश्वर का सर्वोत्तम ...

'धनपति' आदि नाम होते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि (परमेश्वर के नाम) कहीं गौणिक, कहीं कार्मिक और कहीं स्वाभाविक अर्थों के वाचक हैं।

ईश्वर का नाम–स्मरण

किसी एक वैरागी के दो चेले थे। वे प्रतिदिन गुरु के पग दाबा करते थे। एक ने दाहिने पग और दूसरे ने बाएँ पग की सेवा करना बाँट लिया था। एक दिन एक चेला कहीं गया था और दूसरा अपने सेव्य पग की सेवा कर रहा था। इतने में गुरु ने करवट फेरी तो उसके पग पर दूसरे गुरुभाई का सेव्य पग पड़ा। उसने ले डण्डा पग पर धर मारा। गुरु ने कहा – 'अरे दुष्ट ! तूने यह क्या किया ?' चेला बोला – 'मेरे सेव्य पग के ऊपर यह पग क्यों आ चढ़ा ?' इतने में दूसरा चेला आया। वह भी अपने सेव्य पग की सेवा करने लगा। देखा तो पग सूजा पड़ा है। गुरु से पूछा–'यह मेरे सेव्य पग में क्या हुआ ?' गुरु ने सब वृत्तान्त सुना दिया। वह भी मूर्ख न बोला – न चाला। चुपचाप डण्डा उठाकर बड़े बल से गुरु के दूसरे पग में मारा। तो गुरु ने उच्च स्वर से पुकार मचाई। तब तो दोनों चेले डण्डा लेके गुरु के पगों को पीटने लगे। तब तो बड़ा कोलाहल मचा और लोग सुनकर आये। उनमें से किसी बुद्धिमान् पुरुष ने साधु को छुड़ाया। पश्चात् उन दोनों मूर्ख चेलों को उपदेश किया कि – 'देखो, ये दोनों पग तुम्हारे गुरु के हैं। उन दोनों की सेवा करने से उसी को सुख और दुःख देने से उसी एक को दुःख होता है।'

जैसे एक गुरु की सेवा में चेलों ने लीला की, इसी प्रकार जो एक अखण्ड, सच्चिदानन्द–अनन्त–स्वरूप परमात्मा के विष्णु, रुद्रादि अनेक नाम हैं, इन नामों का अर्थ जैसा कि (सत्यार्थ–प्रकाश के) प्रथम समुल्लास में प्रकाश कर आये हैं, उस सत्यार्थ को न जानकर शैव, शाक्त, वैष्णवादि सम्प्रदायी लोग परस्पर एक दूसरे के नाम की निन्दा करते हैं। मन्दमति तनिक भी अपनी बुद्धि को फैला कर नहीं विचारते हैं कि ये सब विष्णु, रुद्र, शिव आदि नाम एक अद्वितीय, सर्वनियन्ता, सर्वान्तर्यामी, जगदीश्वर के अनेक गुण–कर्म–स्वभावयुक्त होने से उसी के वाचक हैं। भला, क्या ऐसे लोगों पर ईश्वर का कोप न होता होगा ?

नामस्मरण इसको कहते हैं कि– **यस्य नाम महद्यशः।** (यजुर्वेद 32. 3) परमेश्वर का नाम बड़े यश अर्थात् धर्मयुक्त कामों का करना है। जैसे ब्रह्म, परमेश्वर, ईश्वर, न्यायकारी, दयालु, सर्वशक्तिमान् आदि नाम परमेश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव से हैं। जैसे ब्रह्म = सबसे बड़ा, परमेश्वर = ईश्वरों का ईश्वर, ईश्वर = सामर्थ्ययुक्त, न्यायकारी = कभी अन्याय नहीं करता, दयालु = सब पर कृपादृष्टि रखता, सर्वशक्तिमान् = अपने सामर्थ्य से ही सब जगत् की उत्पत्ति–स्थिति–प्रलय करता, सहाय किसी का नहीं लेता; ब्रह्मा = विविध जगत् के पदार्थों का बनानेवाला, विष्णु = सबमें व्यापक होकर रक्षा करता, महादेव = सब देवों का देव, रुद्र = प्रलय करनेवाला आदि नामों के अर्थों को अपने में धारण करे अर्थात् बड़े कामों से बड़ा हो, समर्थों में समर्थ हो, सामर्थ्यों को बढ़ाता जाए, अधर्म कभी न करे, सब पर दया रक्खे, सब प्रकार के साधनों में समर्थ हो, शिल्प–विद्या से नाना प्रकार के पदार्थों को बनावे, सब संसार में अपने आत्मा के तुल्य सुख–दुःख समझे, सबकी रक्षा करे, विद्वानों में विद्वान् होवे, दुष्ट कर्म करनेवालों को प्रयत्न से दण्ड देवे और सज्जनों की रक्षा करे। इस प्रकार परमेश्वर के नामों का अर्थ जानकर परमेश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव के अनुकूल अपने गुण–कर्म–स्वभाव को करते जाना ही परमेश्वर का नामस्मरण है।

मो. 9879528247

पत्र/कविता

जाति-पाति का रोग मिटाओ

स्वामी था संसार का, आर्यवर्त्त महान्।
ऊँची थी संसार में, आर्यवर्त्त की शान।।
आर्यवर्त्त को शान, जगत् करता था आदर।
सच्चे ईश्वर भक्त, यहाँ थे सब नारी–नर।।
प्रतिदिन संध्या–हवन, भारती सब करते थे।
दानी थे गुणवान, पराया दुख हरते थे।।
गौतम कपिल कणादि से ऋषिवर थे विद्वान्।
वेद–ज्ञान से विश्व का, करते थे कल्याण।।
करते थे कल्याण यहाँ थे सच्चे मानव।
जिनका सुनकर नाम काँप उठते थे दानव।।
परोपकारी धीर–वीर, सम्राट यहाँ थे।
धनी–बली निर्भीक, निराले ठाठ यहाँ थे।।
हरिश्चन्द, शिवि, राम से राजा थे बलवान।
न्यायकारी सज्जन बड़े, वेदों का था ज्ञान।।
वेदों का था ज्ञान, धर्म के थे अनुरागी।
भरत–लक्ष्मण कृष्ण, जैसे थे त्यागी।।
वर्ण–व्यवस्था सभी मानते थे नर–नारी।
सभी तरह से सुखी, यहाँ थी प्रजा सारी।।
पद पाते थे सब यह कर्मों के अनुसार।
मिलकर रहते थे सभी, आपस में था प्यार।।
आपस में था प्यार, फूट का रोग नहीं था।
अत्याचारी यहाँ एक भी लोग नहीं था।।
जन्म जाति का रोग आज बढ़ गया देश में।
गुण्डों का दल उच्च शिखर चढ़ गया देश में।।
बढ़ा रहे नेता यहाँ, जाति–पाति का रोग।
खतरनाक इस रोग से, व्याकुल हैं सब लोग।।
व्याकुल हैं सब लोग, नित्य होते हैं झगड़े।
पनप रहें हैं यहाँ, देख लो, गुण्डे तगड़े।।
अबलाओं की लाज, यहाँ लूटी जाती है।
विद्वानों की कमर, यहाँ कूटी जाती है।।
मिट जाएगा देश यह, अगर रहा यह हाल।
जागो ! प्यारे, आर्यो ! करो देश का ख्याल।।
करो देश का ख्याल वेद प्रचार करो तुम।
देव दयानन्द बनो, खलों से नहीं डरो तुम।।
जाति–पाति का रोग मिटाओ, जोश दिखाओ।
'नन्दलाल' फिर राम–राज्य, भारत में लाओ।।

पं. नन्दलाल 'निर्भय'
आर्य सदन बहीन, जनपद–पलवल (हरियाणा)
मो. 9813845774

सरला बहन

सरला बहन हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की प्रथम विदेशी शिष्या थी। उनका जन्म 5 अप्रैल 1901 को हुआ। जब वे अपने देश में अंग्रेज़ों के अन्याय के बारे में सुनती थी तथा गांधी जी की अहिंसक क्रान्ति में शामिल होकर भारत की सेवा करने की उनकी इच्छा प्रबल हो उठी। उन्होंने गांधी जी से भारत आने की अनुमति माँगी। काफी कहने पर गांधी जी ने भारत आने की इजाजत दे दी और 4 जनवरी 1932 को वे भारत के लिए रवाना हो गयी। वे सेवाग्राम में बापू से मिली। उन्हें गांधी जी के विचार, अनुशासन, एकता, नई तालीम, जीवन की बुनियादी शिक्षा, आश्रम की 'प्रार्थना तथा गांधी जी का व्यक्तित्व उनका अहिंसक क्रान्ति का विचार, काफी अच्छा लगा और उन्होंने सर्वप्रथम हिंदी सीखनी शुरु कर दी। लेकिन सेवाग्राम वर्धा की गर्मी उन्हें माफिक नही आ पाई, उन्हें मलेरिया हो गया। इसलिए गांधी जी ने उन्हें अल्मोड़ा स्वास्थ्य लाभ हेतु भेज दिया। उन्हें पहाड़ बहुत अच्छा लगा। उन्होंने पर्वतीय क्षेत्र में ही रहना उचित समझा ओर गांधी जी ने उन्हें पहाड़ में रहकर सेवा करने को कहा। इंग्लैण्ड में जन्म लेकर भारत को अपनी कर्मस्थली बनाया, वह भी भारत का पर्वतीय अंचल–कुमाऊँ। कुमाऊँ में पूरे 50 वर्ष उन्होंने पहाड़ की सेवा की। गाँव के बच्चों के हाथ–मुँह धोती, मुँह पोंछती और उन्हें साफ करने को कहती।

स्वतत्रंता संग्राम–सेनानियों के परिवारो को जिनकी सम्पत्तियाँ कुर्क हो गई थी उनके परिवारों में रात–रात जागकर राहत राशि व राशन अपनी पीठ पर लादकर पहुँचाया करती थी। अंग्रेज़ों ने देशद्रोही होने का लांछन लगाया, उन्हें जिन्दा या मुर्दा गिरफ्तार करने का आदेश दिया था। वे तीन बार जेल गयी तथा 1 वर्ष का उन्हें कठोर कारावास भी हुआ। जेल में रहकर वे गीता, रामायण लोगों को पढ़कर सुनाती थी। पहाड़ की जनता व आन्दोलनकारियों ने उन्हें पूरा सहयोग दिया। बासीखेत के स्व. शक्ति दादा (शक्ति सिंह) जी बताते थे कि सरला बहन जी 3 रात तक उनके घर के पास बासीखेत में एक बांज के पेड़ पर रहीं। रात को एक विशेष चिड़िया की आवाज में बोलकर फिर शक्ति दादा उन्हें पेड़ पर ही भोजन देते थे। आजादी से पहले ही सन् 1946 में पूज्य बापू ने उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा को देखकर तथा उनकी पहाड़ में रहकर की गयी सेवा तथा महिला शिक्षा व महिलाओं के कष्ट मुक्ति, पर्यावरण, नशाबन्दी, बुनियादी शिक्षा, नारित्व की रक्षा, बाल विवाह प्रथा रोकने के लिए उन्हें एक आश्रम खोलने की अनुमति दी।

श्री आचार्य कृपलानी जी, श्रीमती सुचेता कृपलानी, श्री विचित्र नारायण शर्मा जी, श्री बाँकेलाल कन्सल तथा अल्मोड़ा के जाने–माने लोग उनके सहयोगी बने। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव श्री बी. डी. सनवाल और सरला बहन ने अल्मोड़ा से पैदल यात्रा शुरु की। अल्मोड़ा बागेश्वर, गरुड़, मुनस्यारी, धारचूला, पिथौरागढ़, लोहाघाट, चम्पावत, मायावती तक का जिक्र भी उनकी डायरी में मौजूद है। उन्होंने पहाड़ का चप्पा–चप्पा घूमकर पहाड़ की समस्याओं की जानकारी ली व धनी लोगों से चन्दा भी लिया। सन् 1946 तक उन्होंने 45000/– रु. जमा किया और 5 दिसम्बर 1946 को कस्तूरबा महिला उत्थान मंडल (लक्ष्मी आश्रम कौसानी संस्था) की स्थापना की, जहाँ आज तक हजारों बालिकाएँ शिक्षा पा चुकी हैं और पा रही हैं। यहाँ की बहिनें ऊँचे–ऊँचे पदों पर आसीन हैं। विदेशों में भी यहाँ की बहिनें कार्य कर रही हैं। सरला बहन सरल स्वभाव की थी, उनका नाम हैनी कैथरिन से सरला बहन पड़ा। यह नाम उन्होंने जीवन में सार्थक किया। उनके आश्रम में जाति संबोधन वर्जित था। वे मानव हितैषी थी। उन्हें देश के सम्मानित जमना लाल बजाज पुरस्कार से नवाजा गया, लेकिन उन्होंने स्वीकार नहीं किया। श्री सुन्दर लाल बहुगुणा, श्रीमती विमला बहुगुणा, श्री मान सिंह रावत, श्रीमती शशिप्रभा रावत, सुश्री राधा भट्ट, सुश्री कान्ति भट्ट, शोभा बहन, कृष्णा भट्ट, दीक्षा बिष्ट, दिवा भट्ट, श्री सदन मिश्रा, श्रीमती दया मिश्रा, श्री मोहन सिंह रावत, श्री डेविड भाई, श्रीमती देवी पाण्डे, श्रीमती दुर्गेश, श्रीमती पुष्पा विदुषी, श्रीमती भवानी कुंजवाल, श्रीमती जानकी प्रशान्त, श्रीमती नारायण ी कोरंगा, श्रीमती कलावती व्यास तथा श्रीमती शारदा विदुषी बहन उनके सान्निध्य में सदा जुड़े रहे तथा उनके कार्य व उपदेशों को जनता तक पहुँचाने में सदा प्रयासरत रहे। श्रीमती शारदा विदुषी ने सरला बहिन जी के सान्निध्य में दिल्ली से 'प्रयाग महिला विद्या पीठ विदुषी' की शिक्षा पाई तथा इन्दौर कस्तूरबा ग्राम में निर्मला देशपाण्डे द्वारा शान्ति सेना की ट्रेनिंग ली और सर्वधर्म अध्ययन हेतु आचार्य विनोबा भावे जी के आश्रम में आध्यात्मिक अध्ययन, ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार, वर्धा (महाराष्ट्र) में रही तथा भूदान, ग्रामदान में भी विनोबा जी के साथ सम्मिलित रही। सरला बहन जी एक गरीब की तरह रहती थी। दलिया, उबली हुई सब्जी व दूध लेती थी। उनका सादा विचार, सादा जीवन, सादा पहनावा, मृदु हंसी सबको मोह लेती थी। वे इस युग की दधीचिं थी। उन्होंने विवाह नहीं किया, पराये बच्चों को ही अपना माना, उन्हें पूरा मातृत्व सा प्यार दिया।

स्वामी गुरुकुलानन्द 'कच्चारहारी'
पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)
'इतिहास के बिखरे पन्ने' से साभार

उपसभा बिहार ने किया कम्बल एवं ऊनी वस्त्र वितरण

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पटना (बिहार) के संयुक्त तत्वावधान में कम्बल एवं ऊनी वस्त्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सी. आर. आर. सी., मेडिकल रोड, गया जी के प्रांगण में सफलतापूर्वक हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ हवन से किया गया। हवन में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने हवन द्वारा समाज की सुख–शांति, समृद्धि एवं जनकल्याण की कामना की। ठंड से प्रभावित जरुरतमंद लोगों के बीच लगभग 127 कम्बलों एवं ऊनी वस्त्रों का वितरण किया गया। इस सेवा अभियान का मुख्य उद्देश्य शीत ऋतु में कमजोर वर्ग के लोगों को राहत पहुँचाना तथा मानव सेवा की भावना को सुदृढ़ करना था।

लाभार्थियों के लिए खाने–पीने की समुचित व्यवस्था भी की गई थी। उपस्थित लोगों ने विद्यालय की व्यवस्था की विशेष रूप से सराहना की। प्रधानाध्यापक डॉ. मुकेश कुमार पाठक ने कहा कि ऐसे सामाजिक कार्यक्रम समाज में सहयोग, करुणा एवं नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। उन्होंने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा निरंतर किए जा रहे सेवा कार्यों की प्रशंसा की।

कार्यक्रम में उपसभा, बिहार के प्रधान श्री एस.के. झा, मंत्री श्री आर. राय, उप प्रधान श्री एच. के. सिंह एवं विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य भी उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) एन. के. अग्रवाल ने कहा कि इस प्रकार सेवा कार्य समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादायक होते हैं। उन्होंने आयोजकों को इस पुनीत कार्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

मेजर आर एन डी.ए.वी. स्कूल अम्बाला में 100 कुण्डीय यज्ञ

आर्य युवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष योगी सूरी जी के उत्साह पूर्ण नेतृत्व में मेजर आर एन डी.ए.वी. स्कूल अम्बाला छावनी द्वारा नशे के विरुद्ध **'नो नशा नेशन'** कार्यक्रम का आयोजन पटेल पार्क अम्बाला छावनी में किया गया के सामान्य जन एवं प्रशासनिक महकमा ने भी अपनी सहभागिता निभाई।

जागरूकता रैली का आयोजन किया गया जो विद्यालय परिसर से प्रारंभ होकर पटेल पार्क तक गई जहाँ पर विधिवत हवन समारोह आयोजित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में

जिसमें 100 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया गया जिसमें गण मान्य अतिथि प्रबंधक डॉ. जे एस नैन, डॉ. जोगिंदर, डॉ. कामदेव झा, डॉ. बत्रा, श्रीकृष्ण अरोड़ा और आर्य समाज के सदस्य के अतिरिक्त विद्यालय के छात्र–छात्राएँ, अभिभावक गण, शिक्षक गण, सामाजिक संगठन मीडिया जगत, आर्य समाज के सदस्य अम्बाला छावनी नशा मुक्ति पर लघु नाटिका, नशीले पदार्थ के सेवन के दुष्परिणाम पर संबोधन जिनमें नशा नेशन पर शपथ और नशे के दुष्परिणामों के विषय में विस्तार पूर्वक बताया गया। इस महा संकल्प का उद्देश्य आज की युवा पीढ़ी को स्वस्थ व सकारात्मक जीवन शैली के लिए प्रेरित करना था। डी.ए.वी. संस्थाओं द्वारा नशा मुक्त स्वस्थ समाज के निर्माण में यह महत्वपूर्ण प्रशंसनीय कदम होगा।

38वें स्थापना दिवस पर डी.ए.वी. पुष्पांजलि में सप्त कुंडीय यज्ञ

डी.ए.वी. पुष्पांजलि (दिल्ली) ने अपने स्थापना के 38वें वर्ष के प्रवेश के अवसर पर प्रधानाचार्या श्रीमती रश्मिराज बिश्वाल जी के सानिध्य में सप्त कुण्डीय यज्ञ का विद्यालय प्रांगण में आयोजन किया, जिसमें विद्यालय के सभी विंग प्रभारी, अध्यापक अध्यापिकाओं और विद्यार्थियों ने भाग लिया और दिव्य वेदमन्त्रों से विद्यालय परिवार की सुख, समृद्धि, को भी स्थापित करता हैं। उन्होंने छात्र छात्राओं का आह्वान करते हुए कहा कि डी.ए.वी. पुष्पांजलि से पढ़े बच्चे आज विभिन्न क्षेत्रों में सेवा करके राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं, यह हम सभी को गौरवान्वित करता है।

प्रधानाचार्या जी ने कहा कि पूर्व विद्यार्थियों की उपलब्धि गर्व करने वाली रही है, मैं आशा करती हूँ कि इसको सतत और उन्नति की तरफ ले जाने

शुचिता, सतत उन्नति और प्रगति की प्रार्थना की।

प्रधानाचार्या जी ने इस शुभ अवसर पर सभी को शुभकामनाएँ दीं और कहा कि 37 वर्ष पूर्व एक किराए के मकान से प्रारम्भ हुआ विद्यालय आज अपने दो परिसरों सहित अपनी ख्याति से क्षेत्र में विख्यात है। प्रधानाचार्या जी ने कहा कि विद्यालय केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं कराता अपितु जीवन जीने की शैली में भी सभी बच्चों का प्रयास रहेगा। प्रधानाचार्या ने कठोर परिश्रम करके विद्यालय की कीर्ति की वृद्धि के लिए संकल्प बद्ध होने के लिए कहा।

बच्चों ने भजन प्रस्तुत किए, तदोपरान्त प्रधानाचार्या ने प्रसाद वितरण का प्रारम्भ किया, जिसके बाद पूरे विद्यालय परिवार को प्रसाद वितरित किया गया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2026

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय करेगा तृतीय 100 कुण्डीय हवन

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अम्बाला शहर द्वारा नशामुक्त भारत के संकल्प को एक जनांदोलन का स्वरूप प्रदान करते हुए नशामुक्ति जागरूकता अभियान के अंतर्गत तृतीय 100 कुण्डीय हवन की घोषणा की गई। यह हवन 1 फरवरी 2026 को किया जाएगा।

यह समूचा अभियान नशामुक्त समाज के निर्माण की दिशा में केवल एक धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित न होकर एक व्यापक सामाजिक आंदोलन के रूप में उभर रहा है, जिसका उद्देश्य समाज को नशे के दुष्प्रभावों से जागरूक कर स्वस्थ एवं सशक्त राष्ट्र का निर्माण करना है।

आगामी आयोजनों को लेकर महाविद्यालय परिसर में उत्साह, सकारात्मकता एवं जागरूकता का वातावरण व्याप्त है। नशामुक्त भारत के संदेश को प्रभावशाली ढंग से समाज तक पहुँचाने के लिए विद्यार्थियों द्वारा संदेशपरक एवं रचनात्मक रंगोलियों की तैयारी की जा रही है। इसके साथ–साथ नशा विरोधी स्लोगन, पोस्टर प्रदर्शनी, जागरूकता बोर्डस एवं अन्य सृजनात्मक गतिविधियों के माध्यम से नशामुक्ति का संदेश जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

नशामुक्ति जागरूकता अभियान आर्य युवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष योगी सूरी जी के मार्गदर्शन में यह पहल युवाओं को नशे से दूर रहकर स्वस्थ, जीवनशैली अपनाने को प्रेरित कर रहा है।

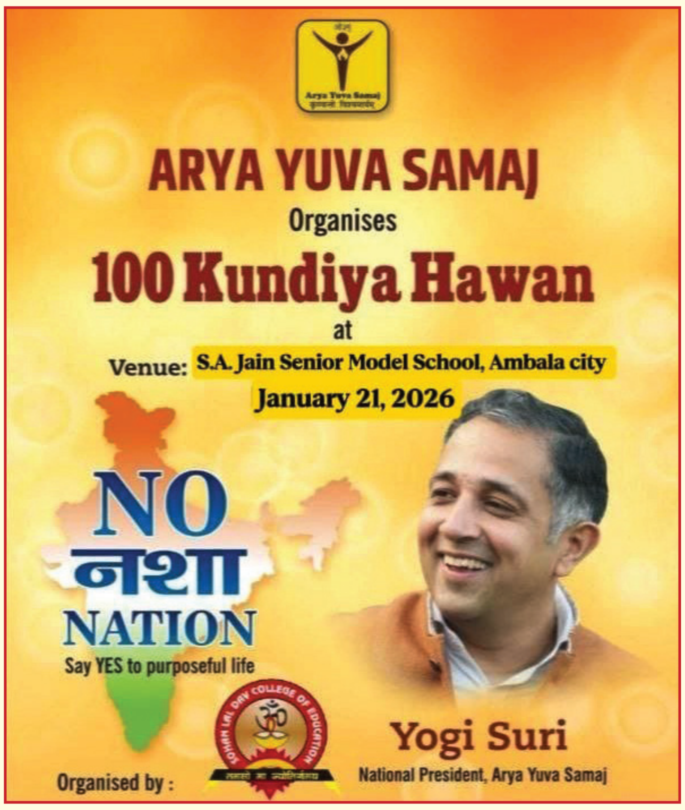

के पी ए के महाविद्यालय अम्बाला में बसंत पंचमी पर्व

के.पी.ए.के. महाविद्यालय में बसंत पंचमी और विद्यालय के स्थापना दिवस के अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में विद्यालय के चेयरमैन श्री अनिल गुप्ता जी उपस्थित रहे। कक्षा दसवीं व बारहवीं के विद्यार्थियों ने भी बोर्ड परीक्षाओं में सफलता के लिए आहुतियाँ अर्पित कर ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रधानाचार्या श्रीमती रेखा गोयल भागी सहित अध्यापक–अध्यापिकाओं व अन्य कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भी यज्ञ में भाग लिया।

श्री अनिल गुप्ता, मैनेजर डॉ. विकास कोहली ने सभी अध्यापक–अध्यापिकाओं, विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों को बसंत पंचमी व विद्यालय के स्थापना दिवस की शुभकामनाएँ दीं और कहा कि इस वर्ष विद्यालय अपने 104 वर्ष पूरे करके 105वें वर्ष में प्रवेश कर गया है।

प्रधानाचार्या ने कहा कि आज बसंत पंचमी के साथ इस विद्यालय का स्थापना दिवस भी है। हम ईश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि विद्यालय दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति करे और यहाँ से शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी ऊँचे–ऊँचे पदों पर आसीन हों। कक्षा दसवीं व बारहवीं के विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद दिया गया।

प्राइमरी कक्षाओं के विद्यार्थियों ने पीले रंग के परिधानों में रंग–बिरंगी पतंगों के साथ खूब आनंद उठाया।

हंसराज पब्लिक स्कूल पंचकूला में वार्षिक समारोह

पंचकूला में सेक्टर–6 स्थित हंसराज पब्लिक स्कूल में वार्षिक समारोह 'कल्चरल कैडेन्स' का आयोजन उल्लास के साथ संपन्न हुआ। सांस्कृतिक मूल्यों, सृजनात्मक अभिव्यक्ति और समग्र शिक्षा के अद्भुत संगम से सजा यह कार्यक्रम दर्शकों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव सिद्ध हुआ।

संगीत, नृत्य, नाट्य एवं कलात्मक प्रस्तुतियों द्वारा विद्यालय की समग्र एवं मूल्य–आधारित शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को सशक्त रूप से प्रतिबिंबित किया।

इस अवसर पर पद्मश्री श्री राजेंद्र गुप्ता, माननीय सांसद (पंजाब) तथा श्री ज्ञान चंद गुप्ता, पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा विधानसभा, की गरिमामयी उपस्थिति ने समारोह की शोभा को और भी बढ़ाया।

मुख्य अतिथि ने विद्यालय के मूल्यपरक शिक्षा प्रयासों की सराहना करते हुए विद्यार्थियों के अनुशासन, आत्मविश्वास एवं कलात्मक प्रतिभा की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

पुरस्कार वितरण में विद्यार्थियों, पूर्व छात्रों एवं कर्मचारियों को शैक्षणिक, खेल, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया।

प्रधानाचार्या श्रीमती जया भारद्वाज ने अतिथियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का समापन 'ग्रैंड फिनाले' के साथ हुआ, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**